कल, आज और कल भी बहुपयोगी
विश्व स्नेह समाज
मासिक, वर्ष:११, अंक ११
अगस्त : १२, इलाहाबाद

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य:
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल
साहित्य/भाषा परामर्शक
डॉ० दुर्गाशरण मिश्र, रोहतास, बिहार

सम्पादकीय कार्यालय:
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचना

01 पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
02 सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.
सभी पद अवैतनिक है।

एक प्रति:	रु0 10/–
वार्षिक:	रु0 110/–
पंचवर्षीय–	रु0 500/–
आजीवन सदस्य:	रु0 1100/–
संरक्षक सदस्य:	रु0 5000/–

अंदर पढ़िए

नरेन्द्र मोदी की स्वीकार्यता और अस्वीकार्यता का अर्थ....०६
विष्णु गुप्त

मीडिया भी भ्रष्टाचार की गिरफ्त में....................०८
-सलीम रहमान खिलजी

रक्षा बन्धन स्नेह एवं प्यार का त्यौहार १०
-देवदत्त शर्मा 'दाधीच'

लोकहित पर आधारित विश्व व्यवस्था की जरुरत.........११
-सैयद मुहम्मद असलम

भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष..........................१२
-ब्रजभूषण चतुर्वेदी (बी.बी.सी)

समाज के सहयोग के बिना हम हर्गिज़ आगे नहीं बढ़ सकते १४
-सीताराम गुप्ता

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग	04
अपनी बात	05
कविताएँ	28,29
हिन्दीतरभाषी रचनाकार	27
अध्यात्म	21
महिला रचनाकार	20
कहानियां	
मिलनी: जय शंकर प्रसाद उपाध्याय	16,
कँटिली गलियाँ: जेबा रसीद	22
साहित्य समाचार–	31, 32
ज्योतिष	30
लघु कथाएँ	32
स्वास्थ्य	33
समीक्षाएँ	34

ऊँ सुमङ्गूली प्रतरणी सुशेवा पत्ये श्वसुराय शंभूः। स्योना श्वश्र्वै प्र गृहान्विशेमान्।।

(अथर्व. १४.२.२६)

वेद में घर में प्रवेश करने वाली नववधुओं की गुण व विशेषताओं के बारें में निम्नलिखित चार गुण हैः७

१. नववधुओं को पारिवारिक जनों के दुःखों से तारने वाली होना चाहिए।

२. पति की सेवा और सुश्रूषा करके उसे सदा प्रसन्न रखना चाहिए.

३. श्वसुर के लिए शान्ति और कल्याणदात्री होना चाहिए.

४. सास के लिए सुख देने वाली होनी चाहिए.

नववधुओं को इन चारों गुणों से युक्त होकर पति गृह में प्रवेश करना चाहिए.

+++++++++++++++++++++++++++

किसी के प्रति सहानुभूति, दया, उपकार करके उससे बदले की भावना न रखने पर आत्मा को शान्ति मिलती है.

+++++++++++++++++++++++++++

बदले की भावना से की गई सेवा मे स्वार्थ की गन्ध आती है और उसका प्रतिकार न मिलने पर स्वभावतः दुःख होता है. ऐसे दुःख से दुःखी होकर वह व्यक्ति भविष्य में दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति विमुख हो सकता है.

+++++++++++++++++++++++++++

किसी के लिए किया गया सेवा कार्य, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से कर्ता को फल देने वाला होता हैं. सहायता के प्रति उसके हृदय से उद्भूत कृतज्ञता के भाव कर्ता को आनन्द प्रदान करते हैं.

+++++++++++++++++++++++++++

इस संसार में हमें चारो तरफ बाजार लगा हुआ दिखाई पड़ता है, कोई कुछ खरीद रहा है, कोई कुछ खरीद रहा है, कोई कुछ खरीदने की इच्छा कर रहा है. यहां की दुकानों में क्रेताओ की अपार भीड़ लगी हुई है. सभी लोग अपनी इच्छाओं का सौदा कर रहे हैं.

+++++++++++++++++++++++++++

हँसना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है. इससे शरीर के अन्दर के अवयवों का व्यायाम हो जाता है, मन प्रसन्नता से भर जाता है; किन्तु दूसरों पर हंसना भी कभी कभी विग्रह का कारण बन जाता है.

मानव की संवेदनाओं की अभिव्यक्ति जब ऐसे शब्दों द्वारा प्रगट की जाती है जिनमें एक प्रवाह व ध्वनि होती है, तब हम उसे गति की संज्ञा देते हैं.

✍**दाऊजी**

आदाब अर्ज़ है

बेटा से बेटी भली, विपत पड़े दे साथ।
बेटा उल्टै खाट को, तो बिटिया पकड़े हाथ।।

नारी भोजन दो गुना, साहस होता साठ।
लज्जा होती चार गुना, कामवासना आठ।।

स्त्री होवै पतिव्रता, प्रेमी चतुर सुजान।
वह गृहणी कहलात है, पति का रखती ध्यान।।

काम क्रोध मद लोभ सब, हैं जीवन के अंग।
इनसे ऊपर जो उठै, वह ईश्वर के संग।।

ऐसी जगह निवास हो, रोटी रोजी होय।
धनोपार्जन साधन रहे, मित्र भी होवै कोय।।

सेवक ब्राह्मण न रहें, राजा वैद्य न कोय।
न बसिये उस क्षेत्र में, विद्या, नदी न होय।।

भय से डरिए तब तलक, जब तक रहता दूर।
आजावै जब सामने, कर दो डटकर चूर।।

मीठा पानी हो चहे, या होवै वह खार।
अपना रस्ता खुद चुनें, ताकत होत अपार।।

जिसमें जितनी शक्ति हो, कार्य करो तदरूप।
छोटा बड़ा न देखिए, कार्य समय अनुरूप।।

स्व अधिकारों के लिए, करो लड़ाई जाय।
इससे इज्जत स्वयं ही, बढ़ जाती है भाय।।

✍**संगम लाल त्रिपाठी** 'भंवर', प्रतापगढ़, उ.प्र.

अपनी बात

आमिर खान के नाम एक खुला पत्र

आपके द्वारा प्रस्तुत 'सत्यमेव जयते' नामक कार्यक्रम सराहनीय प्रयास हैं. ०७ जुलाई को २०१२ के एपिसोड में आपने 'भारत में छुआ-छूत एवं जातिवाद' पर दिखाया. मुझे लगता है कि इस विषय पर आपको कुछ और शोध और चिन्तन की आवश्यकता हैं. मैं इलाहाबाद का निवासी हूं. यहां प्रत्येक वर्ष माघ मेला और ६/१२ वर्ष पर अर्द्धकुम्भ/कुम्भ मेला आयोजित होता है. जिसमें एक दिन में एक लाख से लेकर एक करोड़ तक की जनसंख्या गंगा यमुना के पवित्र संगम में स्नान करती है. हमारे मनिषियों की व्यवस्थानुसार यह मेला खुले मैदान में लगता है. आप कल्पना कीजिए जिस नगर की कुल जनसंख्या लगभग २० लाख हो उसमें नदियों के तट पर इतने लोग क्या जाति/धर्म/सम्प्रदाय के नाम पर अलग-अलग रह सकते हैं. इस अवसर पर हर कोई यहां स्नान करके पूर्ण लाभ अर्जित करना चाहता है. यहां यह कोई नहीं सोचता कि उसके बगल में चलने वाला, स्नान करने वाला व्यक्ति किस जाति/धर्म/सम्प्रदाय का है और न ही नहाते समय सोचता है. इस प्रकार के आयोजन इस बात के प्रतीक है कि हमारी सामाजिक व्यवस्था में जाति/धर्म/सम्प्रदाय का कोई स्थान नहीं है. केवल कुछ परम्पराएं है और कुछ तथाकथित समाज के ठेकेदारों द्वारा पोषित कुप्रथाएं है. कुछ परिवारों में आज भी यह व्यवस्था है कि रसोई घर में रसोइए के अतिरिक्त परिवार के किसी भी सदस्य का प्रवेश निषिद्ध है, तो क्या परिवार के अन्य सदस्य अछूत हो जाते है, नहीं.

आजादी के समय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था-'हमको आजादी का प्रारम्भ ग्राम विकास से करना होगा' क्या आज का कोई जनप्रतिनिधि, नौकरशाह, जनसेवक इस बात की ओर तनिक भी ध्यान देता है. सब अपने-अपने पद का दुरुपयोग करके केवल अपना घर भरने की आजादी मना रहे हैं. ग्राम का दलित हो अथवा सवर्ण आज भी वैसा ही है जैसा वो पहले था. आपने अपने इस एपिसोड में यह भी दिखाया कि शहरी जनता जाति-पाति, छुआ-छूत को नहीं मानती. इसका क्या कारण है? इसका कारण है कि शहर की जनता शिक्षित होकर इन सब विडम्बनाओं को भूल गई है और ग्रामीण जनता को अपने परिवेश के अंदर ही गुजर वसर करना है तो वह डरती है. क्या आप दावे के साथ यह कह सकते है कि दलितों के नाम पर रोटी सेंकने वाले हमारे दलित नेताओं/नौकर शाहों के घर कोई गांव का दलित जाकर बैंठ सकता है, उनके साथ खाना खा सकता है? नहीं. क्योंकि यहां बात जाति-पात, छूआ-छूत की नहीं बल्कि बात शिक्षित और अशिक्षित की, अमीर और निर्धन की है. जिस प्रकार एक गांव का निर्धन दलित किसी अपने ही जाति के अमीर/शिक्षित के यहां जाकर न तो बैठ सकता है, न बात कर सकता है और न ही उनके साथ खाना खा सकता है उसी प्रकार एक गांव का निर्धन सवर्ण भी किसी शिक्षित/अमीर दलित या सर्वण के यहां नहीं कर सकता है. हमारे देश में मूल समस्या है शिक्षा और अशिक्षा, गरीबी और अमीरी की. जाति/पाति, छूआ-छूत की नहीं. जाति-पाति, छूआ-छूत की तो बात ही छोड़िए एक गरीब बाप, अपने अमीर बेटे के घर, एक गरीब या अशिक्षित भाई अपने भाई के घर वो सम्मान नहीं पाता तो जो उसे पाना चाहिए. इसके कितने उदाहरण मैंने अपनी आंखों से स्वयं देखे हैं.

मंच से भाषण देना, वोट की राजनीति करना, दलित, अगड़ा-पिछड़ा, हिन्दु-मुस्लिम की बात करना अलग बात है. लेकिन वास्तविक समस्या के जड़ में जाना अलग बात हैं. आज वास्तविक जरुरत इस तरह के भाषण/कार्यक्रम दिखाकर आम आदमी को बेवकूफ बनाने के बजाय पिछड़ापन व अशिक्षा को दूर भगाने की है. आगे आप स्वयं समझदार हैं.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मुद्दा

नरेन्द्र मोदी की स्वीकार्यता और अस्वीकार्यता का अर्थ

गुजरात के मुख्यमंत्री के जितने समर्थक है उतने ही विरोधी भी. मोदी की शख्सियत की जब भी व्याख्या होती है तब सिर्फ गुजरात दंगो की एकतरफा बात ही होती है. गोधरा कांड पर एक तरह से पर्दा डाल दिया जाता रहा है. यही सोच और मानसिकता ही एक ऐसी शक्ति है जिसकी विसात पर नरेन्द्र मोदी न केवल अडिग है बल्कि अपने विरोधियों को पराजय की ओर ढकेलते भी रहते हैं. विश्व बैंक, अमेरिकी प्रशासन, यूरोपितय यूनियन से लेकर भारत सरकार की समीक्षाओं और रिपोर्टों में मोदी की कामयाबी की मुहर लगती रही है.

✍विष्णु गुप्त,

मो०09968997060

गुजरात के मुख्यमंत्री न केवल विख्यात है बल्कि कुख्यात भी है. उनके जितने समर्थक है उतने ही विरोधी हैं. देश के अंदर ही नहीं बल्कि सात समुद्र पार भी उनकी लोकप्रियता और अलोकप्रियता चरम पर है. वर्ल्ड की प्रमुख पत्रिका 'टाइम' के सर्वेक्षण में नरेन्द्र मोदी ने पंसदीदा सूची में तीसरा और नापंसदीदा सूची में पहला स्थान पाया है. मोदी की लोकप्रियता अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा, अमेरिकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन और अन्ना हजारे, नीतिश कुमार, सचिन तेन्दुलकर से मीलो आगे निकल गयी. मोदी की लोकप्रियता और अलोकप्रियता के कारण क्या है? इसका उत्तर गोधरा नरसंहार और गुजरात दंगो में ही समाहित है. दोनों घटनाएं मानवता के लिए कलंक थी? पर मोदी की शख्सियत की जब भी व्याख्या होती है तब सिर्फ गुजरात दंगो की एकतरफा बात ही होती है. गोधरा कांड को पड़ोसी देश की साजिश और अपने देश के जेहादी तत्वों की कारस्तानियों व उनकी खूनी राजनीति पर एक तरह से पर्दा डाल दिया जाता रहा है. यह एकांकी सोच और मानसिकता ही एक ऐसी शक्ति है जिसकी विसात पर नरेन्द्र मोदी न केवल अडिग है बल्कि अपने विरोधियों को पराजय की ओर ढकेलते भी रहते हैं. केन्द्र सरकार की पूरी ताकत, सीबीआई की अराजक व प्रत्यारोपित अभियान के साथ ही साथ न्यायिक घेरेबंदी के बाद भी नरेन्द्र मोदी का चरमोत्कर्श की नयी श्रृंखलाएं व उपलब्धियां ऐसी है जिनके प्रशंसक उनके विरोधी भी है. विश्व बैंक, अमेरिकी प्रशासन, यूरोपियन यूनियन से लेकर भारत सरकार की समीक्षाओं और रिपोर्टों में मोदी की कामयाबी की मुहर लगती रही है. गुजरात आज देश का सबसे समृद्धशाली और विकास की अनवरत सीढ़िया तय करने वाला प्रदेश है और इसका श्रेय अनिवार्य तौर पर नरेन्द्र मोदी को ही जाता है. गुजरात दंगो के पीड़ितों को न्याय मिल रहा है. अभी-अभी ओड कांड के २३ अभियुक्तों की सजा निश्चित हो गई है. पर कश्मीर के हिन्दुओं और सिख दंगो के दोषियों को सजा मिली है क्या? कश्मीर के हिन्दुओं का कत्लेआम करने वाले आतंकवादियों को तथाकथित धर्मनिरपेक्ष शक्तियां योद्धा मानती है. ये विसंगतियां ही बहुसंख्यक गुजराती अस्मिता को नरेन्द्र मोदी के सहचर होने के लिए प्रेरित करती है. किसी भी पहलू या समस्या का एकांकी नहीं, संपूर्ण परिपेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया चलनी चाहिए. पर मोदी विमर्श में एकांकी विमर्श की ही प्रक्रिया चलती है. नरेन्द्र मोदी के खिलाफ एकांकी मानसिकता और कथित धर्मनिरपेक्ष शक्तियों का जेहादीकरण भी देख लीजिये. देश का कथित धर्मनिरपेक्ष शक्तियां कश्मीरी हिन्दुओं के कत्लेआम करने वाले और कश्मीरी हिन्दुओं को कश्मीर से पलायन करने के लिए बाध्य करने वाले हुरियत आतंकवादियों को सम्मानित करती हैं और उन्हें धर्मनिरपेक्ष घोषित किया जाता है. हुर्रियत के नेता गिलानी, मीरवाइज, उमर फारूख जैसे आतंकवादियों के साथ सहचर कथित धर्मनिरपेक्ष शक्तियों की यह कारस्तानी और जेहादी साजिश को गुजरात का बहुसंख्यक संवर्ग भूलता नहीं. अमेरिका और यूरोप नरेन्द्र मोदी को वीजा नहीं देते पर कश्मीरी आतंकवादियों के लिए उनका वीजा हमेशा चलायमान रहता है. गुजरात दंगो के बाद नरेन्द्र मोदी ने विकास और शांति व सुरक्षा को अपनी मुख्य नीति और सत्ता का मूलमंत्र बनाया. गोधरा और गुजरात दंगो के बाद शांति स्थापित करने और सुरक्षा की भीषण चुनौतियां थी. गोधरा कांड में जिन जेहादी तत्वों ने खूनी खेल खेला था उनकी जेहादी अभियान के निशाने पर गुजरात और नरेन्द्र मोदी थे. गुजरात

में अक्षरधाम पर जेहादी हमले हुए. अक्षरधाम पर हुए जेहादी हमले के समय भी गुजरात में फिर से दंगा-फसाद की आशंका थी. लेकिन मोदी ने यह सुनिश्चित किया कि गुजरात में फिर से वैसी प्रतिक्रिया न हो जैसी कि गोधरा कांड के बाद पूरे गुजरात में हुई थी. इस्लामिक आतंकवादी पूरी तरह से गुजरात को अपने आगोश में लेकर दंगे कराने की रणनीति से साजिशें बुन रहे थे. अमेरिका में गिरफ्तार आतंकवादी और मुंबई हमले का एक साजिशकर्ता हेडली ने अमेरिकी न्यायालय में खुलासा किया था कि उसने गुजरात में कई बार जाकर रैकी की थी और मुंबई हमले जैसा ही कई आतंकी हमले की साजिश रची थी. इस साजिश में हेडली के साथ राणा भी था जो अभी अमेरिकी जेल में सजा काट रहा है. हेडली के साथी गुजरात एटीएस द्वारा मुठभेड़ में मारे भी गये थे. अगर मुंबई हमले जैसा कोई हमला हेडली-राणा गुजरात में करने में सफल हो जाते तो गुजरात की स्थिति कितनी भयानक हो सकती थी जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती हैं.

चाकचौबंद प्रशासनिक व्यवस्था बनाना आज भारतीय सत्ता राजनीति की एक बड़ी चुनौती है. चाकचौबंद प्रशासनिक व्यवस्था नहीं होने के कारण सत्ता की कल्याणकारी व्यवस्थाएं और योजनाएं किस तरह हीलाहवाली और भ्रष्टाचार की भेंद चढ़ती है, यह भी जगजाहिर है. चाकचौबंद और सक्रियता से पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्थाएं ही विकास या उपलब्धियों की सीढ़िया बनाती है. नरेन्द्र मोदी ने इस मंत्र को न केवल आत्मसात किया बल्कि उन्होंने यह सुनिश्चित भी किया कि उनका प्रशासनिक अमला जनांकाक्षाओं पर पूरी तरह से खरा उतरे. विकास की योजनाओं और नीतियों का वजूद कागजों पर नहीं बल्कि जमीन पर होना चाहिए. खासकर आज के युग में विकास की जितनी मूलभूत संसाधनों की जरूरत होती है उन सभी मूलभूत संसाधनों के विकास में गुजरात पूरे देश में अव्वल है. शिक्षा, चिकित्सा और पेयजल के विकास में गुजरात का कोई सानी नहीं है. देश के अन्य भागों में जहां बिजली की समस्या विकराल है, वही गुजरात के ग्रामीण और सुदुर इलाकों में बिजली की प्रचुरता है. यह सब प्रमाणित है. भारत सरकार की विभिन्न समीक्षाओं और रिर्पोटों में भी गुजरात के विकास पर मुहर लगी है और नरेन्द्र मोदी की काबलियत को स्वीकार किया गया है. निवेशको को शांति के साथ ही साथ सुरक्षा भी मिली हुई है. औद्योगिक विकास से आम गुजरातियों को रोजगार के नये अवसर मिले हैं. गुजरात का बहुसंख्यक संवर्ग ही नहीं बल्कि अल्पसंख्यक संवर्ग भी रोजगार के नये अवसरों का लाभार्थी रहा है. इसे झुठलाया नहीं जा सकता है. सदभावना उपवास के कार्यक्रम से भी नरेन्द्र मोदी ने अपनी नयी छवि गढ़ने की सफल कोशिश की है. सद्भावना कार्यक्रमों में अल्पसंख्यक संवर्ग की उपस्थिति रेखांकित हुई है. भारतीय राजनीति में वोट बैंक के लिए अल्पसंख्यकों को भड़काना और अपना राजनीतिक स्वार्थ पूरा करने की प्रक्रिया हमेशा चलती रहती है. नरेन्द्र मोदी की लगातार जीत यह दर्शाती है कि गुजराती जनमत पूरी तरह से उनके साथ है. जिन्ना प्रकरण से आडवाणी संघ के निशाने पर अभी भी हैं. २०१४ के लोकसभा चुनाव भाजपाा नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में लड़ सकती है.

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें
प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद—211011
bsesy% sahityaseva@rediffmail.com

मुद्दा

मीडिया भी भ्रष्टाचार की गिरफ्त में

लोकतंत्र के चारों स्तंभ भ्रष्टाचार के दलदल में फंस गए हैं. हर स्तंभ में भ्रष्टाचारी हावी है और भ्रष्टाचार मुंह बोल रहा है. देश के भ्रष्ट पत्रकारं जो दिल्ली में ही नहीं बल्कि कस्बों में भी पत्रकारिता की आड़ में गोरखधंधा करते हैं, पूरे पत्रकार समाज पर कलंक है. अवैध धंधों में लिप्त बने रहते हैं. इन दलाल पत्रकारों का काम राजनेताओं, मंत्रियो और अधिकारियों के दरबारी बनकर पत्रकार ही सजग पत्रकारों के दुश्मन बने हुए है. पत्रकार शिकार की तलाश में यहां-वहां घूमकर धन कमा रहे हैं और व्यवस्था को प्रहरी एवं पीड़ितों का पैरोकार कहे जाने वाली पत्रकारिता का गला घोंट रहे हैं. ऐसे भ्रष्ट पत्रकारों पर अंकुश लगाने का देश में कोई कानून भी नहीं है.

✍ सलीम रहमान खिलजी,
समाज प्रवाह, मुंबई

लोकतंत्र का चौथा स्तंभ पत्रकारिता भी भ्रष्ट आचरण की आगोश में समा चुका है, जो मीडिया जगत के लिए चिंताजनक है. २जी स्पेक्ट्रम घोटाले में जिस तरह से खुलासे हुए हैं, उससे पत्रकारिता क्षेत्र में सन्नाटा पसरा हुआ है और यह सन्नाटा मीडिया की पारदर्शिता व निष्पक्षता पर कलंक समान बना हुआ है. इस तरह से लोकतंत्र के चारों स्तंभ यथा-विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका व मीडिया भ्रष्टाचार के दलदल में फंस गए हैं. हर स्तंभ में भ्रष्टाचारी हावी है और भ्रष्टाचार मुंह बोल रहा है. २जी स्पेक्ट्रम घोटाला में जेपीसी की मांग को लेकर संसद ठप्प रही. विपक्ष अड़ा रहा और सरकार भी अड़ी रही. दोनों के अपने तर्ककुर्तक रहे किन्तु १ लाख ७५ हजार करोड़ की रकम का यह २जी स्पेक्ट्रम घोटाला अपने आप में देश की जनता के कुठाराघात ही है. जांच होनी चाहिए, दोषी दण्डित होने चाहिए. देश का पैसा देश की जनता को सूद सहित वापस मिलना चाहिए. यही एक नेक इंसाफ होगा. रही बात देश के भ्रष्ट पत्रकारों की, जो दिल्ली में ही नहीं बल्कि जिलों और कस्बों में भी पत्रकारिता की आड़ में गोरखधंधा करते हैं, पूरे पत्रकार समाज पर कलंक है. अवैध धंधों में लिप्त बने रहने वाले ऐसे तत्वों का पत्रकारिता जगत (वह चाहे प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया हो) से कोई सरोकार नहीं है, जो भ्रष्ट व्यवस्था के मैनेजर(दलाल) बनकर हम पत्रकारों के भाग्य विधाता बने हुये हैं.

इन दलाल पत्रकारों का काम राजनेताओं, जनप्रतिनिधियों, विधायकों, मंत्रियो और अधिकारियों के दरबारी बनकर बने हुए पत्रकार ही सजग पत्रकारों के दुश्मन बने हुए है. नरेगा के बढ़ते विस्तार के समान ही गांव देहात से लेकर दिल्ली तक इन चापलूस और भ्रष्ट पत्रकारों की कमी नहीं है. जो पत्रकार अथवा पत्रकारकर्मी बनकर शिकार की तलाश में यहां-वहां घूमकर धन कमा रहे हैं और व्यवस्था को प्रहरी एवं पीड़ितों का पैरोकार कहे जाने वाली पत्रकारिता का गला घोंट रहे हैं. सच तो यह है कि अपनी इस निकृष्ट व कलंकनीय दलाल की भूमिका में बने हुए पत्रकारों का आचरण अपने पेशे के साथ कुकर्म व अन्याय करने के समान है, जो समूचे पत्रकारिता जगत को शर्मसार करने वाला है.

२जी स्पेक्ट्रम घोटाले में कारपोरेट लाबिस्ट बनी हुई नीरा राडिया के उजागर हुए कथित बातचीत के टेप आखिर यही तो कह रहे हैं. यह चर्चित टेप, देश से गद्दारी कर रहे राजनेताओं व अधिकारियों, बिग कार्पोरेट घरानों और मीडिया के बनु हुए स्वयंभू ताकतवर व खतरनाक गिरोह का पर्दाफाश ही करती हैं. अफसोस कि देश में पहली बार इन स्वयं-भू बने हुए पत्रकारों के चेहरे भी बेनकाब हुए हैं.

वैसे कुछ टीवी न्यूज चैनल, जिनको पाक-साफ कहा जाता है, द्वारा विकास-दर के समान बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर और पत्रकारिता की भूमिका पर बहस की जा रही है. हालांकि इन बहसों में कुछ निकल कर आने वाला नहीं है, क्योंकि ऐसे भ्रष्ट पत्रकारों पर अंकुश लगाने का देश में कोई कानून भी नहीं है. प्रेस कौन्सिल ऑफ इंडिया ऐसे मामले को देखती जरुर है, किन्तु उसे भी कोई ठोस कानूनी अधिकार हासिल नहीं है. ऐसे में हो भी क्या सकता है? यह एक गंभीर व विचारणीय विषय है. क्योंकि देश को बचाना है तो

भ्रष्टाचार के खिलाफ अंतिम लड़ाई ही होगी. समाज में पनपता व शिष्टाचार का रूप लेता भ्रष्टाचार का यह आचरण एक ऐसी दीमक बन रहा है जो देश को खोखला कर रहा है. इस भ्रष्टाचारी दीमक से गांव, शहर, कस्बे और महानगर तक इसकी भेंट चढ़ चुके हैं. इस पर समय-समय पर सुप्रीम कोर्ट की तल्ख फटकार भी बेअसर होती नजर आती है. आखिर चपरासी से लेकर मंत्री-संत्री तक और स्वयं न्याय तंत्र भी इस अखण्ड भ्रष्टाचार से प्रभावित बने हैं. समाज में भी अब यही भ्रष्टाचारी सम्मान के पात्र बनते जा रहे हैं. ईमानदार को मूर्ख की श्रेणी में रखा जा रहा है.

इसीलिये ईमानदारी से अपने कर्म को करने वाले और देशहित व समाज हित की बात करने वाले कलमकारों को व्यवस्था के भ्रष्ट मंत्रियों द्वारा अपमान के घूंट भी पिलाये जाते हैं तथा पुलिस दांव लगते ही फंसा भी देती है. ऐसे में विश्वास भी करें तो किस पर? आखिर कौन सा तंत्र है जिसे इस देश व देशवासियों का रक्षक व संरक्षक समझा जाये? इसे भी देश का दुर्भाग्य ही समझा जायेगा कि भ्रष्टाचारी पूरी ताकत के साथ व्यवस्था को चुनौती देते हुए लामबंद हो रहे हैं और कार्पोरेट बनी हुई मीडिया इनका साथ दे रही है. आखिर, उनके पालनहार भी तो यही भ्रष्टाचारी बने हुए हैं. देश में यह पहली बार देखा जा रहा है कि भ्रष्टाचारियों का काकस खतरनाक तरीके से ताकतवर बनता जा रहा है और व्यवस्था पूरी तरह से कमजोर, बेबस और लाचार बनी हुई है. चाहे वह भ्रष्ट मंत्री हो या संतरी, आईपीएस हो या आईएएस हो अथवा भ्रष्ट वरिष्ठ पत्रकार-ये सभी पूरी ताकत के साथ बचाव की मुद्रा में बने हुए हैं. भ्रष्टाचार की लड़ाई के पुरोधा बने पूर्व युवा प्रधानमंत्री स्व० राजीव गांधी ने पहली बार इस सच को खुले रुप से स्वीकार किया कि दिल्ली से भेजा एक रुपया गांव में आते-आते १५ पैसे ही रह जाता है. लेकिन इन्हीं भ्रष्टाचारियों ने उस युवा पुरोधा को बोफोर्स कांड में कुछ इस तरह फंसाया कि बोफोर्स का भूत अभी तक इस परिवार का पीछा नहीं छोड़ रहा है. जबकि उस बोफोर्स का सच अभी तक उजागर नहीं हो पा रहा है. जिसके सहारे दिवंगत विश्वनाथ प्रताप सिंह ने प्रधानमंत्री पद को पाने की सफलता हासिल की थी. और इन्हीं बोफोर्स तोपों के दम पर वाजपेयी शासन में हुए कारगिल युद्ध को जीता गया था. आज राजीव गांधी दुनिया में नहीं है, लेकिन उनकी पत्नी और बेटा-बेटी तो देश में मौजूद हैं और सत्ता के केन्द्र बिन्दु भी बने हुए हैं. लेकिन इस पनप रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ की लड़ाई में उनकी अहम भूमिका पर बनी हुई खामोशी निश्चित ही चिंताजनक हैं. भ्रष्टाचार चाहे तत्कालीन एनडीए शासन वाजपेयी सरकार के समय में हुए हों अथवा वर्तमान यूपीए शासन के समय में लेकिन इन दोनों समूहों की सरकारों में हुए घोटालों की अवश्य ही जांच होनी चाहिए.

वहीं तमाम राजनीतिक दलों को भी देश के प्रति अपनी जवाबदेही मानकर यह स्वीकार करना होगा कि गलतियां हुई है जिनके लिए वह सभी जिम्मेदार हैं. इसमें किसी की जिम्मेदारी कम और किसी की जिम्मेदारी ज्यादा संभव हो सकती है, लेकिन प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार तो सभी ही हैं.

इसीलिए इन सभी को 'आत्मीय संकल्प के साथ इन हुई गलतियों का पश्चाताप करना ही होगा और इन भ्रष्टाचारों की निष्पक्ष, स्वतंत्र जांच के लिए भी तैयार होना होगा. चाहें जांच कोई भी एजेंसी करें. लेकिन जांच एजेंसी भी ऐसी गठित हो जो पूर्वाग्रहों से ग्रसित ना हो. तभी संभव हो सकेगा भ्रष्टाचार के इस खेल का दूध का दूध और पानी का पानी.

शीघ्र संदेश वाहक रचना

बाप-मेरे चार बच्चे हैं. एक ने एम.बी.ए, दूसरे ने एम.ए., तीसरे ने पी.एच.डी. और चौथा चोर है.

दोस्त-चोर को घर से निकालते क्यों नहीं?

बाप-वही तो कमाता है, बाकी सब बेरोजगार है?

++

दिमाग घूमा देने वाली प्रथा-

इनकम टैक्स और कालर ट्यून में क्या समानता है????

दोनों का पैसा हम भरते हैं, मजा कोई और लेता है.

श्याम किशोर सिंहः ६३३५१५८६५६

+++++++++++++++++++++++++++++++++++++

विश्वास का बंधन भी अजीब होता है, जितना नाजुक उतना ही मजबूत होता है, उठा लेते है जो कांटो को हाथों में फूल भी उन्हीं को नसीब होते हैं.

मो०:०८८६७४१७५०५

त्योहार

रक्षा बन्धन स्नेह एवं प्यार का त्यौहार

देवदत्त शर्मा 'दाधीच',
जयपुर, राजस्थान

परमपिता परमेश्वर की जब, कुल पर कृपा होती।
झर-झर पड़ते घर आंगन में, व्रत-पर्वो के मोती।।
पुण्य पूर्वजों का प्राणों में, प्रेम पुलक भर देता है।
कलियुग में भी आ विराजते, सतयुग, द्वापर त्रेता है।।

पर्व, उत्सव, त्योहार आदि मनुष्य के जीवन में मनोरंजन उल्लास व आमोद-प्रमोद के लिये जरुरी है. इसी उद्देश्य से विभिन्न धर्मो-सम्प्रदायों, जाति विशेषों में अनेक पर्व त्योहार व उत्सव मनाये जाते हैं. हमारे राष्ट्र में भी इसी प्रकार से राष्ट्रीय-सामाजिक व धार्मिक पर्व मनाये जाते है. कुछ पर्व ऐसे है जो सम्पूर्ण राष्ट्र में एक जैसे मनाये जाते हैं. उनमें दीपावली, दशहरा, मकर संक्रांति, व रक्षा बन्धन आदि हैं. पर्व हमारे मन के अंधकार को दूर करके आपसी स्नेह, प्रेम-भाईचारा को प्रेरणा देते हैं. हर देश व समाज में मनाये जाने वाले पर्व-त्योहार-उत्सव व जयंतियां वहां के प्राचीन इतिहास और वर्तमान स्थिति के सही प्रतिबिम्ब होते हैं. हमारे सभी पर्वो में पूजा-अर्चना और अराधना की प्रधानता है. पुराणों के अनुसार प्रत्येक उत्सव-त्योहार-पर्व के पीछे कोई न कोई कथा प्रचलित है. पर्व हमें हमारी संस्कृति, समाज व परिवार को जोड़ने का कार्य करते हैं. इनमें हजारों वर्षो की यादें सुरक्षित है. प्रेम-स्नेह-हर्ष उल्लास के इन पर्वो में रक्षा बन्धन का अपना अलग ही महत्व है. हमारे प्रमुख त्यौहारों में रक्षा बन्धन का पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है. यह भाई बहिन के पवित्र स्नेह मिलन-प्रेम का त्यौहार है. इसी दिन ऋषि पूजन भी होता है. रक्षा बन्धन कब से मनाया जाता है इसका उल्लेख वैदिक काल में दक्षायण ब्राह्मण ने राजा शतानीक, इसके बाद सतयुग में दैत्य राजा बालि के रक्षा का विधान बनाया. इस प्रकार कई कथाएं प्रचलित है.

राजा बलि ने देवताओं से स्वर्ग का राज्य छीन लिया. देवगण इधर-उधर भटकने लगे, उनके भटकने को देखकर माता अदिति चिन्तित हुई. माता ने कश्यप जी से प्रार्थना की. महर्षि कश्यप जी ने अदिति को भगवान विष्णु की उपासना करने की सलाह दी. भगवान प्रसन्न हुए और उसकी पीड़ा हरने के लिये वामन रूप में अवतार लिया और राजा बलि से तीन कदम धरती मांगी. यद्यपि शुक्राचार्य ने बलि को तीन कदम धरती देने के लिए मना भी किया. लेकिन बलि ने घर आये विप्र को निराश करना उपयुक्त नहीं समझा और भगवान को तीन कदम नापकर भूमि लेने का निवेदन किया. वामन बटु ब्रम्हचारी रूप में भगवान विष्णु ने एक कदम उठाकर सारी पृथ्वी ले ली तथा दूसरा कदम उठाकर स्वर्गलोक और बोले राजन, तीसरा कदम रखने का स्थान बताओ वरना आपका वचन भंग हो जायेगा. राजा बलि ने गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए अपना सिर सामने झुका दिया.

भगवान विष्णु राजा बलि की दानवीरता के समक्ष पराजित हुए और कहा राजन! आप पाताल लोक में जाकर अपना शासन स्थापित करो और मैं तुम्हारे द्वार पर गदा धारण करके द्वारपाल बना रहूंगा. बलि पाताल लोक में चला गया और भगवान अपना वचन निर्वहन हेतु उसके द्वार पर प्रहरी बनकर रहने लगे, और बैकुण्ड धाम का त्याग कर दिया. बैकुण्ठ धाम में भगवान को न पाकर मां लक्ष्मी परेशान हुई और वे इधर-उधर ढूंढने लगी. भक्त नारद से संकेत पाकर लक्ष्मी जी पाताल लोक में पहुंची और भगवान विष्णु को द्वारपाल के रूप में देखकर प्रसन्न हुई. वे सीधे राजा बलि के दरबार में पहुंची. बलि माता लक्ष्मी को देखकर प्रसन्न हुए और उनकी पूजा अर्चना की. लक्ष्मी जी ने कहा राजन! मैं तुम्हें अपना सहोदर मानकर तुम्हारे दाहिने हाथ पर रक्षा सूत्र बांधने आई हू. इससे तुम्हारा कल्याण होगा. इस प्रकार बलि को रक्षा सूत्र बांधकर लक्ष्मी जी ने बलि को अपना भाई बनाया. राजा बलि भी प्रसन्न हुए और घोषणा की कि भविष्य में आज के दिन (श्रावणी पूर्णिमा) सभी महिलायें अपने भाइयों के रक्षा सूत्र बांधकर मंगलकामनायें किया करेंगी. ऐसा कह कर राजा ने भगवान को द्वारपाल पद से मुक्त कर दिया.

एक दूसरी मान्यता है कि सतयुग में ऋषि मुनि लोग चातुर्मास में एक स्थान पर ही रहते थे, भ्रमण बन्द कर देते हैं. प्रवचन एवं यज्ञ का आयोजन किया करते थे. यज्ञ स्थल पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के हाथ पर यज्ञ सूत्र बांधा जाया करता था. यज्ञ सूत्र का रूप ही रक्षा बंधन है.

अब तक भारत वर्ष की हिन्दू महिलायें इस परम्परा का पालन करती है और अपने भाइयों के रक्षा सूत्र बांधकर अपने और भाई के परिवार

के लिए मंगलकामना करती है. बहिन भाई के पवित्र प्रेम और स्नेह मिलन का यह पवित्र त्यौहार है. इतिहास में ऐसा उल्लेख मिलता है कि मेवाड़ की महारानी कर्मवती ने मुसलमान शासक हुंमायू को अत्याचारी बहादुरशाह के आक्रमण से मेवाड़ की रक्षा करने के लिए राखी भेजी थी. एक मुसलमान होते हुए भी हुमायूं अपने प्राणों को हथेली पर रखकर अपनी हिन्दू बहन की रक्षा के लिये चल दिया. महारानी उससे पूर्व ही अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपनी बारह हजार क्षत्राणियों को साथ में लेकर जौहर की ज्वाला में जल कर भस्म हो चुकी थी. हुंमायूं को यह सब जानकर अत्यन्त दुःख हुआ परन्तु उसने तो अपने कर्तव्य का पालन किया. रक्षा सूत्र बंधन को अब राखी बंधन कहा जाने लगा.

आजकल भाई अपनी बहिन से राखी बंधवा कर द्रव्य देकर उऋण हो जाते हैं. लेकिन फिर भी इसी त्यौहार की पवित्रता में संदेह नहीं हैं. आज रक्षा बंधन की मूल भावना लुप्त हो गई है और सम्पूर्ण त्योहार व्यावसायिक रंग में रंग गया है. इस प्रवृत्ति को उन लोगों ने और भी बढ़ाया है जो अपनी जेब में राखियां रखकर बाजार में निकल जाते हैं और हर जाने अनजाने व्यक्ति की कलाई में उन्हें बांधकर उनसे दक्षिणा प्राप्त करते हैं. आज के दिन घर-घर में खीर बनती है और उसके साथ सेवइयां यह परम्परा युगों से चली आ रही है. हां त्योहार मनाने के तौर तरीकों में अंतर हो सकता है. किन्तु इन त्योहारों में समरसता के दर्शन होते है.

लोकहित पर आधारित विश्व व्यवस्था की जरुरत

✍ **सैयद मुहम्मद असलम**
गोरखपुर, उ०प्र०

वैज्ञानिक प्रगति ने मनुष्य के लिए विलासिता के सामान जरुर मुहैया कराए हैं लेकिन पर्यावरण का सत्यानाश भी उसी पैमाने पर किया है. दुनिया भर के मुल्कों में विकास की यही प्रक्रिया चलाई जा रही है जिससे प्रकृति को लगातार हर तरह के प्रदूषण की मार झेलनी पड़ रही है. आज वायुमंडल में इतनी जहरीली गैसे घुल चुकी हैं कि भविष्य में पृथ्वी के जीवों को सांस लेना भी गुनाह करने जैसा लग सकता है. पृथ्वी के गर्भ में मौजूद जल भी लगातार नीचे खिसक रहा है. नदियां नालों में परिवर्तित हो चुकी हैं. कुंए, तालाब सब इसी पश्चिमी विकास के माडल की भेंट चढ़ ही चुके हैं. साम्राज्यवादी-पूंजीवाद के पोषक देश पूरी दुनिया के लिए खतरा बनकर खड़े हो चुके हैं. पृथ्वी को बर्बाद करने की कीमत पर दुनिया के मुट्ठी भर देश विकसित देशों की सूची में शामिल हैं. सोचने की बात यह है कि जब पूरी दुनिया के सभी देश विकसित होंगे तब पृथ्वी और इसके पर्यावरण का क्या हश्र होगा. जाहिर है कि विकास की यह पश्चिमी अवधारणा ही प्रकृति विरुद्ध है. इसलिए एक ऐसी वैश्विक नीति का निर्धारण होना चाहिए जो प्रकृति और पर्यावरण के अनुकूल हो. इसके लिए दुनिया भर के मेहनतकश अवाम को अपना महत्व व अपनी शक्ति को पहचानना होगा. इसके लिए एक वैश्विक मंच जरुरी है. द्विमासिक दस्तक के राजाराम चौधरी का लेख 'कोपेनहेगनः जलवायु परिवर्तन सम्मेलन एक त्रासद कॉमेडी' प्रकाशित हुआ था. लेख के अंत में लेखक ने पूरी दुनिया के कामगारों का एक अंतर्राष्ट्रीय फोरम बनाने की आवश्यकता को मजबूती से रेखांकित किया है.

ग्लोबल वार्मिंग सहित दुनिया की तमाम समस्याओं के हल का रास्ता लेखक ने बखूबी सुझाया है. लेखक राजाराम चौधरी ने अपने लेख में जोर देकर कहा है कि आज वैज्ञानिक प्रगति ने दुनिया को स्वर्ग में बदलने के साधान मुहैया कराए हैं, परन्तु मनुष्य पृथ्वी को विनाश की ओर धकेल रहा है. व्यक्तिगत लाभ तथा व्यक्तिगत संपत्ति की वर्तमान व्यवस्था की जगह सार्वजनिकहित पर आधारित एक नई वैश्विक व्यवस्था के निर्माण पर लेखक ने बल दिया है. वसुधैव कुटुम्बकम् की भारतीय अवधारणा ही विश्व को विनाश से बचाकर प्रकृति तथा पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली मनुष्य को दे सकने में सक्षम हो सकती है. विश्व बन्धुत्व की भावना ही पूरे विश्व के मनुष्यों को परस्पर सहयोग व लोकहित के कार्यो से शांतिप्रिय जीवन बिताने की राह दिखा सकती हैं.

एस.एम.एस.रचना

♦दिल में खुदा है, आंखों में नशा है बातों में मजा है, चाहत में अदा है अंदाज भी जुदा है, दोस्ती में वफा है अरे यार इसलिए सारी दुनिया हम पर फिदा है

♦खुदा की फुरसत में इक पल वो आया होगा/जब उसने आप जैसा प्यारा इंसान बनाया होगा/नजाने कौन सी दुआ कबुल हुई हमारी/जो उसने आपको आपको हमसे मिलाया होगा। ०८९५७१२४४६०

भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष

■ स्वरुप बदला, तकनीक सहारा बनी लोकप्रियता घर-घर पहुंची

२६ अप्रैल १६१३ की वह शाम जब दादा फालके, जिन्हें हम भारत में फिल्मों का जनक कहते हैं, ने बम्बई में कुछ लोगों के साथ अपने द्वारा बनाई गई पहली फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' का प्रदर्शन कर स्वः निर्मित फिल्म से क्रान्ति ला दी. १६१३ से २०१२ तक सफर में अब सिनेमा सौ वर्ष का भारत में हो गया. वैसे कुछ फिल्मी लेखक 'संत पुण्डलिक' जो १६१२ में बनी थी, को भी भारत में बनी पहली फीचर फिल्म मानते हैं, लेकिन उसके प्रमाण कहीं नहीं है. इन सौ वर्षो में फिल्मों ने अनेको तकनीक के कारण अपना स्वरुप ही बदल दिया कि हर प्रकार के परिवर्तनों ने आज सिनेमा को घर-घर में पहुंचाकर इसे १०० वर्षो में अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया. भारत में फिल्म को दिखाने का सिलसिला २६ जुलाई १६१६ में बम्बई की वॉटसन होटल में पहले आश्चर्य से विश्व सिनेमा के आविष्कारकर्ता फ्रांस के लुमरिये ब्रदर्स से शुरु होता है. लेकिन फिल्म निर्माण का इतिहास तो छोटी-बड़ी फिल्मों के साथ शुरू होकर १६१३ में दादा साहेब फालके की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' से शुरु होकर आज तक धारा प्रवाह के रूप में चला आ रहा है. हम यह कहें कि भारतीय सिनेमा संसार में फिल्म निर्माण में विश्वभर में अग्रणी है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी. फिल्मों ने भारत सहित विश्वभर को लोकप्रियता के कारण अपने आगोश में लिया व आज मनोरंजन के नाम पर घर-घर में गरीब-अमीर का भेदभाव भूलकर फिल्मों का दौर खत्म हुआ 'आलमआरा' पहली सवाक फिल्म से. लेकिन १६१३ से १६३१ के बीच सैकड़ों मूक फिल्मों ने अपनी कहानी कहते हुऐ सिनेमा के दर्शकों की फौज खड़ी कर दी. इस यात्रा में सिनेमा छोटा व बड़ा होता गया. ३५ एम.एम., ७०एम.एम, सिनेमा स्कोप व फिर १६एम.एम., सी.डी., डी.वी.डी व जब घड़ी एवं मोबाइल में भी सिनेमा आ गया. मूक फिल्मों ने हर रूप में फिल्मों के दर्शक बढ़ाये, वहीं सवाक् सिनेमा ने इसे सर्वाधिक लोकप्रियता प्रदान की.

सौ वर्ष के इस फिल्मी इतिहास में कुछ फिल्में तो मील का पत्थर बनकर पूरे विश्व में भारतीय फिल्मों का परचम लहराती दिखाई दी. संगीत, कहानी, अभिनय में गुरूदत्त की 'प्यासा' एवं महबूब खान की 'मदर इण्डिया' (१६५७) ने जहां भारतीय फिल्म की श्रेष्ठता सिद्ध की, वहीं 'मुगले आज़म' (१६६०) ने दर्शकों के बीच क्लासिकल फिल्म निर्माण व भव्यता का परचम फहराया. अन्य फिल्में में विमल राय की 'दो बीघा जमीन' (१६५३), 'राम और श्याम' (१६६७), 'तीसरी मंजिल' (१६६६), एम.एस.सत्यू की 'गरम हवा' एवं हास्य से भरपूर 'जाने भी दो यारों' को दर्शकों ने बहुत पसंद किया. ये फिल्में इन सौ वर्षो की फिल्मों में चर्चाओं में सिरमौर रही. व्यावसायिक रूप से प्रारंभ से ही यानी जब ३ मई १६१३ को व्यावसायिक रूप से 'राजा हरिश्चन्द्र' का बम्बई में फीचर फिल्म के रूप में पहला प्रदर्शन हुआ, तभी से बड़ा सिलसिला शुरू हुआ, फिर एक के बद एक हिट क्लास फिल्में आने लगी.

✍ **ब्रजभूषण चतुर्वेदी** (बी.बी.सी)
इन्दौर, म.प्र.

'लंका दहन' (१६१७), 'कालिया मर्दन' (१६१६), पहली सवाक् अर्देसर ईरानी की क्लासिकल 'आलम आरा' (१६३१), कालिदास (पहली तमिल फिल्म), भक्त प्रहलाद(तमिल), के.एल. सहगल की 'देवदास' (१६३५), नितिन बोस की 'धूप छांव', अछूत कन्या (१६३५), किस्मत(१६४५), स्तन (१६४४), मदर इण्डिया, नया दौर, मुगले आजम, संगम(१६६४), गंगा जमुना(१६६१), मेरे मेहबूब (१६६३), शोले(१६७५), बॉबी(१६७३), मुकद्दर का सिकंदर(१६७८), क्रान्ति (१६८१), मैंने प्यार किया (१६८६), राम तेरी गंगा मैली (१६८५), हम आपके हैं कौन(१६६४), दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे(१६६५), गदर-एक प्रेम कथा (२००१), थ्री इडियट्स(२००६), माय नेम इज़ खान, रोबोट (२०१०). ये फिल्में व्यवसाय की दृष्टि से व लोकप्रियता में प्रत्येक १०-१२ वर्षो में अपनी लोकप्रियता की कहानी कहती हुई सबको खुश कर गई. इसी में एक टी.रामाराम, शिवाजी गणेशन, राज कपूर, दिलीप कुमार, देवानंद, संजीव कुमार, धमेन्द्र, राजेन्द्र कुमार, सुरेखा, मधुबाला, किशोर कुमार, रफी, मुकेश, लता मंगेशकर भी सफलता की सीढ़ियां चढ़कर आगे बढ़े.

इन फिल्मों के साथ कई फिल्में ऐसी भी आई, जो फ्लॉप थी, लेकिन अपनी अलग-अलग असफलता की कहानी कह गई. जैसे जिंदा लाश (१६३२), झांसी की रानी(१६५३), मेरा

नाम जोकर(१९७०), शालीमार(१९७८), सिलसिला(१९८१), मृत्युदाता(१९९७), मैं और मिसेस खन्ना(२००९) फिल्मों ने कुछ निर्माता-निर्देशकों की लोकप्रियता व कमाई घटा दी.

मजे की बात यह है कि इन सौ वर्षो में कई अभिनेता व अभिनेत्रियां भी अपनी प्यार भरी कहानी लिख गये. देवानंद-सुरैया, उत्तमकुमार - सुप्रिया दवे, धमेन्द्र-हेमा मालिनी, ऋषि कपूर-नीतू सिंह, राजकपूर-नरगिस, संजीव कुमार-सुलक्षणा पंडित की प्रेम कहानियां भी फिल्म संसार में चर्चाएं कराती रही. राजेन्द्र कुमार-माला सिन्हा, दिलीप कुमार-वैजयन्तीमाला के किस्से भी कुछ कम नहीं चले.

इस प्रकार यह १०० वर्षो का फिल्मों का इतिहास अपनी इबारत समय-समय पर लिखाता रहा. इस संदर्भ में मैं एक बात पाठकों के लिये नई जानकारी के साथ देना चाहूंगा कि सिनेमा के प्रारंभिक दौर में इन्दौर में भी कुछ हस्तियों ने फिल्म निर्माण में हाथ बंटाया. उसमें पूर्व एलोरा व अरूण टॉकिज के मालिक किशनलाल नारसरिया भी थे, जिन्होंने 'श्रीकृष्ण जन्म' एवं 'मोहताज माशूक' जैसी मूक फीचर फिल्में बनाई व जिनका मॉडल कैमरा(१९१७) का आज भी संसार के प्राप्त शूटिंग कैमरे की कहानी कह रहा है, इन्दौर के श्री कमल नारसरिया के पास सुरक्षित है.

सिनेमा या फिल्मों की पहली घटनाएं:-

♦फ्रांस के लुमरे ब्रदर्स ने ७ जुलाई १८९६ को बम्बई की वॉटसन होटल में एक रुपये का टिकिट देकर आंगतुकों को भारत में पहली बार फिल्मों से परिचय करवाया.

♦१९१३ में ३ मई को दादा फालके की पहली मूक फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' का प्रदर्शन हुआ, जबकि इसका विशेष शो २१ अप्रैल को बम्बई में हो चुका था.

♦१९०७ में कलकत्ता के मदान ने पहला सिनेमाघर एलफिस्टन पिक्चर पैलेस बनाया.

♦हिमाशु राय की १९२५ में पहली फिल्म 'लाइट ऑफ एशिया' इंग्लैड व अन्य यूरोप के देशों में व्यावसायिक रूप से प्रदर्शित हुई, जो भारत-जर्मनी के सहयोग से बनी थी.

♦बम्बई के मेजस्टिक सिनेमाघर में हजारों लोगों ने भारत की पहली सवाक् फिल्म 'आलमआरा' देखी, वह दिन था मार्च १९३१

♦१९३२ में बनी इजरामिर की फिल्म 'ज़रीना' में चुंबन के ५० या उससे ज्यादा दृश्य थे, जो चर्चाओं में रहे.

♦१९५९ में गुरूदत्त की फिल्म भारत की पहली फिल्म सिनेमा स्कोप फिल्म थी 'कागज के फूल'.

♦सदानंद हसन मंटो ने १९३७ में पहली रंगीन फिल्म 'किसान धन्या' को रंगीन बनाने का आंशिक प्रयास किया.

♦सर्वाधिक सिनेमा टिकट दर एक रुपये से १०००रुपये मल्टीप्लेक्स में करने वाला शहर १९९५ से २०१२ के बीच बम्बई रहा.

कुल मिलाकर हम यह कहें कि ११५वर्ष का फिल्मों का दर्शन व १०० वर्षो का फिल्मों का सफर देश-विदेश में परिवारों का मनोरंजन का सबब रहा तो कोई बड़ी बात नही हैं. आज फिल्में व सिनेमा दोनों भटक गये हैं. तकनीक बढ़ी, सिनेमा घटे, घटिया फिल्मों की बाढ़ आ गई. सिनेमा का व्यवसाय ९० बिलियन रुपये से बढ़कर २०१५ तक १३७ बिलियन रुपये का होगा. यानी मनोरंजन ही मनोरंजन फिल्में बनाकर नया कीर्तिमान किया. बस अब इंतजार है कि सिनेमा या फिल्में कितनी मौलिकता के साथ चलती रहेंगी.

मेरी दृष्टि में शताब्दी के सितारेः-

निर्माता-निर्देशक- यश चोपड़ा, रामानंद सागर, बी.आर.चोपड़ा, ताराचंद बड़जात्या, सुभाष घई, शक्ति सामंत, मेहबूब खान, के.आसिफ, कमाल अमरोही एव जनक दादा फालकें.

कंपनियाः-एस.एस.वासन(जैमिनी), मोर्गन(ए.व्ही.एम.), प्रसाद एल.व्ही (प्रसाद ब्रांड), राजली(मुक्ता आर्टस), यशराज फिल्म, ए.आर.कारदार

अभिनेता अभिनेत्रियाः-शिवाजी गणेशन, ए.जी.रामचन्द्रन, अमिताभ बच्चन, दिलीप कुमार, सुरैया, राज कपूर, नरगिस, मीना कुमारी, मधुबाला, नूरजहां, श्रीदेवी, वैजयन्ती माला, रेखा, राजेन्द्र कुमार, संजीव कुमार, सलमान खान, शाहरूख खान, आमिर खान, अशोक कुमार, कानन देवी, किशोर कुमार, अक्षय कुमार, बलराज साहनी, अनुपम खेर

संगीतकार व गायकः-के.एल. सहगल, किशोर कुमार, मोहम्मद रफी, मुकेश, अलका याग्निक, लता मंगेशकर, सी.रामचन्द्र, रवीन्द्र जैन, रवि, नौशाद अली.

खलनायकः-अजीत, डैनी, अमरीश पुरी, प्राण

एस.एम.एस.रचना

☐खुदा की फुरसत में इक पल वो आया होगा/जब उसने आप जैसा प्यारा इंसान बनाया होगा/न जाने कौन सी दुआ कबुल हुई हमारी/जो उसने आपको हमसे मिलाया होगा।

♦छोटी सी बात कोई शिकवा ना करना/कोई भुल हो जाये तो माफ करना,/नाराज तब होना जब हम दोस्ती तोड़ देगें, और ऐसा तब होगा जब हम दुनिया छोड़ देगें.

मो०: ०८९५७१२४४९०

समाज के सहयोग के बिना हम हर्गिज़ आगे नहीं बढ़ सकते

■ (यह मात्र भ्रामक विचार अथवा अहंकार है कि हम सेल्फमेड हैं)

✍ **सीताराम गुप्ता,** दिल्ली

उत्तुंग पर्वत-शृंखलाओं की बर्फीली चाटियों के स्पर्श से शीतल हवा मस्ती में बहती हुई जा रही थी. जब वह जंगल से गुज़र रही थी तो एक वन्य लता ने अपनी ख़ूशबू बिखेरते हुए और अपने रंगों को झलकाते हुए उसे आवाज़ दी-''ऐ शीतल हवा! तनिक मेरे समीप आओ और मेरी ख़ूशबू से ओतप्रोत होकर इस संसार को शीतल करती हुई चली जाओ.'' लेकिन गर्वोन्नत वायु ने लता की एक न सुनी और आगे बढ़ गई. कुछ देर के बाद हवा वापस वहीं लौटकर आ गई जहाँ वन्य लता से उसका वार्तालाप हुआ था. हवा की सारी मस्ती हवा हो चुकी थी. उसकी चंचलता जाती रही थी और वह एकदम उदास थी. वह चुपचाप उस वन्य लता के समीप बैठ गई.

हवा को इस हालत में देखकर वन्य लता ने उससे पूछा, ''अभी कुछ देर पहले ही तो तुम यहाँ से गुज़री थीं और अत्यंत प्रसन्नचित्त लग रही थीं और अब इतनी उदासमना दिखलाई पड़ रही हो. क्या बात है? क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकती हूँ?'' यह सुनकर हवा की आँखों से अश्रु झरने लगे. वायु ने कहा, ''मैंने अहंकारवश तेरी बात ही नहीं सुनी और न तेरी खुशबू को ही साथ लिया. लेकिन मैं जैसे ही आगे बढ़ी गंदगी और बदबू में घिर गई. किसी तरह इससे बचकर आगे बढ़ी और घरों तक जा पहुँची लेकिन लोगों ने मेरा स्वागत करने की बजाय अपने घरों की खिड़कियाँ और दरवाज़े बंद कर लिये. इसमें उनका भी कोई दोश नहीं. मुझमें ही दुर्गंध व्याप्त हो गई थी. भला दुर्गंधा युक्त वायु का कोई कैसे स्वागत कर सकता है? काश! मैंने तुम्हारी बात मान ली होती. तुम्हारा सहयोग ले लिया होता! लेकिन आज मैं संकल्प लेती हूँ कि मैं सबके सहयोग का स्वागत करूँगी क्योंकि एक दूसरे के सहयोग के बिना हम न केवल स्वयं आगे बढ़ सकते हैं और न समाज के लिए ही कुछ कर सकते हैं।'' हम सबकी स्थिति भी कुछ-कुछ वायु और लता जैसी ही है. हम सब भी एक दूसरे के सहयोग के बिना एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ा सकते.

पिछले दिनों एक रिश्तेदार सपत्नीक घर आए, दो-तीन दिन रुके. ख़ूब आत्मीयतापूर्ण बातें हुईं. अच्छा लगा. पहले आर्थिक स्थिति पतली थी क्योंकि न तो कभी खुद ही कोई काम किया और न ही कभी उनके पिताश्री ने कोई काम किया था. जब से उनके बच्चों ने सत्ता संभाली आर्थिक स्थिति में बदलाव आया. बातों से झलकता था कि अब आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है लेकिन पति-पत्नी दोनों की एक ही शिकायत रही, ''हमें तो माँ-बाप और दादा-दादी से कुछ नहीं मिला. जो कुछ भी है वह सब हमने स्वयं अर्जित की है.'' इसी प्रकार की शिकायत अनेक लोगों की होती है. यह मात्र अहंकार है. यह आंशिक सत्य हो सकता है पूर्ण सत्य कदापि नहीं हो सकता.

जहाँ तक माँ-बाप और दादा-दादी से विरासत में संपत्ति के मिलने की बात है उसके कई पहलू हो सकते हैं. यदि माँ-बाप और दादा-दादी के पास संपत्ति होती तो वह अवश्य ही तुम्हें मिलती लेकिन यदि उनके पास कुछ था ही नहीं तो वे कहाँ से तुम्हें कुछ देते. एक और प्रश्न उठता है कि क्या मात्र धन-दौलत अथवा पैसा ही वास्तविक विरासत है. धन-दौलत अथवा पैसा न मिलने पर भी माँ-बाप से बहुत कुछ मिलता है हम ये भूल जाते हैं. हम ये भूल जाते हैं कि हमारे अस्तित्व में आने के मूल में हमारे माता-पिता ही तो होते हैं. हम जो भाषा बोलते हैं वह हमने किसी स्कूल या मदरसे में नहीं अपितु माता-पिता के सान्निध्य में ही सीखी होगी. उन्होंने ही उँगली पकड़कर चलना भी सिखाया होगा. उन्होंने अपनी हैसीयत के अनुसार न केवल अच्छी परवरिश की होगी अपितु शिक्षा-दीक्षा दिलाने का प्रयास भी अवश्य किया होगा. घोर ग़रीबी की हालत में भी माँ खुद भूखी रहकर अपने बच्चों का पेट भरने की जी तोड़ कोशिश करती है इसमें संदेह नहीं. ऐसे माँ-बाप से संपत्ति नहीं मिली तो क्या विषम परिस्थितियों में जीने का साहस और प्रेरणा तो अवश्य मिली होगी. फिर कैसे कहा जा सकता है कि हमें माँ-बाप से कुछ नहीं मिला?

कुछ लोगों को माँ-बाप से ही नहीं पूरे समाज से शिकायत होती है. उनका पूछना है कि दुनिया ने उनके के लिए आख़िर किया ही क्या है? ऐसे लोग प्रायः स्वयं में, स्वयं के द्वारा और स्वयं के लिए निर्मित होते हैं. उनके लिए सबकी जिम्मेदारी होती है लेकिन वे खुद किसी के लिए जिम्मेदार नहीं होते. वो कभी ये सोचने की ज़हमत नहीं उठाते कि उन्होंने समाज के लिए क्या किया है अथवा करना चाहिए. यह सही है कि आपने स्वयं अपना विकास किया. आपने अपने समय का सदुपयोग किया, ख़ूब मेहनत करके पढ़ाई की

और एक अच्छी सी नौकरी अथवा व्यवसाय में आ गए. यह ठीक है कि आपने पुरुषार्थ किया. वैसे भी आप पुरुषार्थ नहीं करते तो आपका ही अहित होता. पुरुषार्थ करके आपने अपने लिए अच्छा किया लेकिन क्या इसके पीछे किसी उत्प्रेरक तत्त्व ने काम नहीं किया? क्या आपको इसके लिए कहीं से प्रेरणा और प्रोत्साहन नहीं मिला? क्या अनेक व्यक्तियों और समाज ने आपको आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध नहीं कराए?

जहाँ पर आपने शिक्षा प्राप्त की वे स्कूल, कॉलेज, संस्थान और विश्वविद्यालय क्या आपने स्वयं निर्मित किये थे? जिस कार्यालय अथवा प्रतिष्ठान में आप कार्यरत हैं क्या वह आपके ही परिश्रम का फल है? आप जो व्यवसाय कर रहे हैं क्या वह अन्य लोगों के सहयोग के बिना संभव है? आप जो उद्योग चलाते हैं क्या उसके उत्पाद स्वयं उपभोग में लाकर पैसा कमा रहे हैं? माना आपके पास अथाह संपत्ति है पर क्या मात्र पैसे के बल पर बिना एक डॉक्टर की मदद के रोगी होने पर स्वस्थ हो पाए हैं? आप एक डॉक्टर हैं तो क्या बिना मजदूरों की मदद के ये आलीशान घर और क्लीनिक ख़ुद बना सकते है? एक मजदूर ही क्या बिना किसान की मेहनत के अन्न का एक दाना भी मुँह में डाल सकेगा? एक किसान को भी अच्छी खेती के लिए न जाने कितने लोगों पर निर्भर होना पड़ता है। एक विद्यार्थी को भी पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने के लिए कापी-किताब और क़लम-दवात आदि न जाने कितनी चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है जिसके लिए वह दूसरों पर निर्भर होता है।

बिजली के जिस प्रकाश से हम रात को दिन में परिवर्तित कर देते हैं, पंखे, कूलर व एसी की ठंडी हवा का आनंद लेते हैं, हवाई जहाज़ में बैठ कर मिनटों में हज़ारों मील दूर जा पहुँचते हैं, समाचार पत्र जिसका हम अवलोकन कर रहे हैं, इन सब का आविष्कार हमने नहीं किया लेकिन फिर भी इन आविष्कारों से लाभांवित हो रहे हैं और कह रहे हैं कि हम सेल्फ मेड हैं। हमारे महान पूर्वजों ने हमें श्रेष्ठ जीवन शैली से अवगत कराया, माता-पिता ने जन्म दिया, शिक्षकों ने शिक्षा दी, इन सब का ही नहीं अपितु समाज, देश और इस संपूर्ण सृष्टि का हम पर भारी ऋण है जिससे हमें उऋण होना होता है पर क्या देवऋण, ऋषिऋण, मातृऋण, पितृऋण, स्त्रीऋण आदि ऋणों से हम पूरी तरह से उऋण हो पाते हैं? यदि नहीं तो फिर हम सेल्फ मेड कैसे हो सकते हैं?

बड़ी-बड़ी चीज़ों की बात छोड़िये छोटी-छोटी चीज़ों और ज़रूरतों के लिए भी हम दूसरों पर निर्भर होते हैं। एक मामूली सी लगने वाली क़मीज़ जो हमने पहन रखी है उसे हमारे तन पर सुशोभित करने में सैकड़ों लोगों का योगदान है। खेत में बीज बोने से लेकर पौधे उगने और उनसे कपास मिलने तथा कपास से कपड़ा और क़मीज़ बनने के बीच असंख्य हाथों का परिश्रम है। कपड़े से क़मीज़ बनाने के लिए एक सिलाई मशीन की ज़रूरत पड़ती है। वह लोहे तथा अन्य कई पदार्थों से बनती है। खनिकों द्वारा लोहा और अन्य खनिज पदार्थ खानों से निकाले जाते हैं। बड़े-बड़े करखानों में मजदूरों द्वारा लोहा साफ किया जाता है। फिर दूसरे बड़े-बड़े करखानों में लोहे से बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा छोटी मशीनें बनती हैं। उन्हीं में से एक मशीन पर कारीगर कपड़े से एक अच्छी सी क़मीज़ सिलकर आपको पहनाता है।

अब ज़रा सोचिये कि यदि क़मीज़ में बटन न लगे हों तो कैसा लगे। एक बटन जैसी अल्प मूल्य की वस्तु भी ऐसे ही नहीं बन जाती। उसके लिए भी न जाने कितने हाथों के सहारे की ज़रूरत पड़ती है। एक बटन टाँकने के लिए जो सबसे ज़रूरी यंत्र है वह है सुई। कहते हैं सुई से लेकर जहाज़ तक यानी सुई को सबसे तुच्छ वस्तु समझा जाता है लेकिन उसी सुई के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। हाँ इस छोटी सी तुच्छ चीज़ को तो आप अवश्य ही स्वयं बना लेते होंगे? इसके लिए तो आपको न कच्चे माल की ज़रूरत है और न कल कारखानों की और न कुशल कारीगरों की। नहीं मित्र ऐसा नहीं है।

चलिए मान लेते हैं कि समाज ने आपको कुछ नहीं दिया। यहाँ सब स्वार्थी हैं। बिना कारण कोई किसी को कुछ नहीं देता। लेकिन एक जगह है जहाँ से आपको बहुत कुछ मिलता है और वो भी उपयोगी और बिलकुल मुफ़्त। प्रकषति तो हमें बहुत कुछ देती है पर हम उसे क्या देते हैं सिवाय उसे प्रदूषित और नष्ट करने के। फिर समाज को भी प्रदूषित और नष्ट करें, उसकी उपेक्षा करें तो कौन सी बड़ी बात है? लेकिन वास्तविकता ये है कि हम सब एक दूसरे के सहयोग के बिना अपूर्ण हैं। हमारे विकास में हमारा पुरुषार्थ ही नहीं अन्य सभी का सहयोग अपेक्षित है। क्या माता-पिता, क्या भाई-बंधु, क्या समाज और क्या प्रकषति इन सब के सम्मिलित प्रयासों से ही हमारा जीवन गति पाता है। इन सब के सहयोग के बिना एक सांस लेना भी मुमकिन नहीं। आओ इस भ्रम को तोड़ें कि हम सेल्फमेड हैं। हम सबको महत्त्व देंगे और सबकी रक्षा करेंगे तभी हमारी सुरक्षा संभव है.

मिलनी

जयशंकर उपाध्याय,
राज्यसभा सचिवालय, नई दिल्ली

सासाराम शहर से लगभग २५ किलोमीटर दूर कैमूर पहाड़ी की गोद में बसे गांव बंसडीहा की हर गली सुबह से ही गुलजार नज़र आ रही थी. समर सिंह के संगी-साथी, चेले-चपाटी सभी शादी की तैयारियों को लेकर घर-बाहर एक किए हुए थे. आखिर ठाकुर साहब की आंखों की पुतली नयनतारा की शादी जो ठहरी. टेंट वाले एक दिन पहले से ही मय पलटन के साथ आ खलिहान में सामियाना लगाने की तैयारी में जुट गए थे. हलवाई मिठाइंया तैयार कर बैठकखाने में इत्मीनान से बीड़ी फूंक रहा था और पूरियां बेलने के लिए भाड़े पर लाई गई मज़दूरिनों से हंसी-ठिठोली कर रहा था. उसे मालूम था कि यदि वह एक बार पूरियां तलने-निकालने लगा तो फिर पेशाब करने की भी फुर्सत नहीं मिलेगी. घर के बीच आंगन में गगनचुंबी बांसों का मंडप तैयार किया जा चुका था. 'हल्दी' की रश्म में शामिल होने के लिए नाई घर-घर से लोगों को बुलाने निकल चुका था.

"हरे, जितुआ, ससुरा तू दिनोंदिन ढीठ होता जा रहा है. हम सबेरे ही बोले थे कि घर के सारे कंडालों में पीने का पानी भरवा देना अऊर इनरा के लग्गे जवन खेत है ओमे भी मोटर चलवा के पानी देना ताकि बाराती लोग शाम में ओहरे दिसा-निपटान कर लें. इंहां का बइठा है, भाग ईहां से जल्दी." यह ठाकुर समर सिंह की गर्जनाभरी आवाज थी. जीतूं तुरंत वहां से चला गया. सारी तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी थी. बस आरात के आने का इंतजार था. उधर, गांव बावनबीघा स्थित ठाकुर रणविजय सिंह की कोठी में भी गत सप्ताह से ही रिश्तेदारों का जमघट लगा हुआ था. आसपास के गांवो में ठाकुर की एक रसूखदार व्यक्ति के रूप में पहचान थी. जिगर पांच बहनो के बाद एक ही लड़का था. इसलिए लड़के से उन्हें विशेष लगाव था. सभी लड़कियों की शादी हो गई थी. अब बारी जिगर की थी. बारात ले जाने के लिए ठाकुर साहब ने सैकड़ो गाड़ियों का काफिला तैयार कर रखा था, जिसमें कुछ लक्जरी कारों सहित अन्य गाड़िया शामिल थी. सभी गाड़ियों को बकायदा फूलों से सजाया गया था. गाड़ियों पर मोटे-मोटे अक्षरों में 'जिगर संग नयनतारा' लिखा हुआ था. सारे रिश्तेदार तैयार होकर बारात जाने को आतुर थे. रणविजय सिंह खुद तैयारियों का जायजा ले रहे थे. आचार्य गंगाशरण चतुर्वेदी ने कहा है कि किसी अनिष्ट से बचने के लिए शादी हर हाल में रात ग्यारह बजे तक सम्पन्न हो जानी चाहिए. उसके बाद साइत नहीं है. तभी ठकुराइन छमाछम पायल छनकाती हुई घर की ड्योढ़ी पर आकर त्योरियां चढ़ाते हुए बोली-'ऐ टुनटुन (जिगर का घर का नाम) के पापा, अरे आपको कुछ बुझाता नहीं है. अभी चुमावन का रस्म बाकिए है और आप जाने के लिए हड़बड़ा रहे हैं. आप तो इतने अगुता रहे है जैसे आपेके शादी हो. बिना आसीस दिए-दिलाए मैं अपने करेजे से दूर नहीं होने वाली.' रणविजय सिंह ने चुटकी लेते हुए कहा 'अरे भाग्यवान! मैं नयकी समधीन से भेंट करने के लिए बेयाकुल हूं और तुम हो कि..' ठकुराइन ने आंखे नचाते हुए बनावटी गुस्से में कहा 'मर्दो का तो चरित्तर ही ऐसा होता है. घर का पकवान छोड़ बाहर की पकवान पर लार टपकाते रहते हैं.' 'अच्छा ठीक बा तोहरे बात भइल. लेकिन सब कुछ जल्दीए कराव, काहेंकि समय अब निकलल जाता.' ठकुराइन को खुश करने के अंदाज में ठाकुर मुस्कुराते हुए बोले.

मंगलगीत के साथ चुमावन की रश्म भी पूरी हुई. सभी बाराती गाड़ियों में बैठ चुके थे. कई बाराती असलहे लिए हुए थे मानो दुल्हन व्याह कर नहीं अपहरण करके ले आने वोले हों. वैसे भी ठाकुरों की बारात में जब तक नर्तकी के गाने पर असलहे न दननाएं और शामियाना चिंदी-चिंदी ने हो जाए, तब तक बारात ही क्या! महफ़िल में रंग जमाने के लिए 'रेड लेबल' व्हिस्की की पेटियां पहले ही रखवाई जा चुकी थी. जब सजी-धजी गाड़ियों का काफिला निकला, तो सड़क के किनारे खेतों में काम कर रहे मजदूर इस तरह देख रहे थे मानों इससे पहले उन्होंने बारात ही न देखी हो. अमीरी का प्रदर्शन गरीबों के लिए ईर्ष्या का नहीं, मनोरंजन का विषय होता है. धनबल और बाहुबल का दिखावा किसी को रास आए या न आए, लेकिन यह उन्हें अवश्य रास आता है जिनके पास दिखाने के लिए तन के सिवा कुछ नहीं होता.

इस शादी के दूल्हा-दूल्हन एक-दूजे से भली भांति परिचित थे और 'अगुवाई' भी उन्होंने ही की थी. पढ़े-लिखे लोगों की जुबान में यह एक 'लव-कम-अरेंज मैरेज' थी. वर्षो से प्रतिशोध की आग में जल रहे इन दोनों परिवारों के लिए यह रिश्ता अमन की बारिश लेकर आया. भला किसने सोचा होगा कि मतिमरिया नदी के तट पर जिन परिवारों के कई लोग बालू के ठेके की भेंट चढ़

गए हों, वे कभी मिलनी भी करेंगें. लेकिन सच यही था.

यों तो समर सिंह और रणविजय सिंह दोनों ही रूढ़िवादी प्रवृत्ति के थे, लेकिन जो खुद नहीं बदलते हैं उन्हें समय बदल देता है. इसी अहसास से वशीभूत होकर समर सिंह ने सासाराम से नयनतारा की १२वीं की पढ़ाई समाप्त होते ही इंजीनियरिंग पढ़ने बेंगलूर भेज दिया, तो रणविजय का जिगर भी दिल में इंजीनियरिंग का अरमान लिए चेन्नई पहुंच गया. पढ़ाई पूरी करने के बाद जिगर की बेंगलूर के ही एक आईटी फर्म में नौकरी लग गई. उध ार, नयनतारा की भी पढ़ाई पूरी हो चुकी थी. विधाता का विधान उसकी भी नौकरी उसी आईटी फर्म में लगी जहां जिगर पहले से ही कार्यरत था. एक दिन नयनतारा किसी जरुरी काम के सिलसिले में उस फर्म के 'सोल्यूशन सेल' में आई जहां उसकी मुलाकात जिगर से हुई. कहने को तो यहां पर तकनीकी समस्याओं का समाधान होता था, लेकिन शहर से लगभग ३५०० किलोमीटर दूर एक गुमनाम सी जगह की कानून और व्यवस्था से जुड़ी भीषण स्थानीय समस्या का हल इसी सेल की देन थी. पहली मुलाकात में ही दोनों एक दूसरे को अपना दिल नीलाम कर बैठे. मिलने-जुलने का सिलसिला शुरू हो गया. कुछ दिनों की बातचीत के दौरान उन्हें पता चला कि उनके पिता एक दूसरे के जानी दुश्मन हैं तो यह जानकर उन्हें एकबारगी धक्का लगा, लेकिन तब तक वो काफी आगे निकल चुके थे जहां से लौटना कठिन ही नहीं असंभव था.

एक दिन गरमी की दुपहरी में एक पार्क में पीपल के एक घने वृक्ष की ओट में दोनों बैठे थे. वैसे तो उस पार्क में सुबह-शाम सैर करने वालों का मजमा लगा रहता था, लेकिन दोपहर में और वह भी गरमी के मौसम में जब धरती आग उगल रही होती, तो वहां कुछ प्रेमी जोड़े ही दिखते, जो पार्क के केयरटेकर की मुट्ठी गरम कर वृक्षों और झाड़ियों की छाया में अपने तन की आग शांत करते. इन जोड़ों में प्रायः निर्धन परिवारों से ताल्लुख रखने वाले दिग्भ्रमित युवक युवतियां होते, जो होटल का खर्च उठाने में अक्षम थे. जब दिन ढलने लगता तो केयर टेकर जमीन पर डंडा बजाते हुए पार्क की परिक्रमा शुरू कर देता. इसका मतलब अब लोगों के सैर पर आने का समय हो गया है, प्रेमी जोड़े अब बाहर निकल आये. लेकिन जिगर और नयनतारा उनमें से नहीं थे. चूंकि बेगलूर में रहते हुए उन्हें बहुत दिन नहीं हुए थे, इसलिए वे इस बड़े शहर की छोटी-छोटी बातों से अंजान थे. वे तो बिना किसी योजना के यूं ही चले आए थे. लेकिन केयरटेकर की आंखें धोखा नहीं खा सकती थीं. इस पार्क में प्रवेश करने के लिए यह एक अघोषित नियम था कि जो भी जोड़े दोपहर में यहां आते, वे रामानन्द को सौ-पचास रुपये देकर ही भीतर इंट्री मारते और इस पैसे के बदले उन्हें डंडा की खड़खड़ाहट गूंजने के पहले की समयावधि तक कुछ भी करने की छूट होती. चूंकि जिगर ने रामान्द को पैसे नहीं दिए थे, इसलिए वह वहां पहुंच गया जहां जिगर नयनतारा के साथ बैठा था. रामानंद ने कुटील मुस्कान बिखेरते हुए कहा, 'आनंद लीजिए, सर जी. मैं वह वटवृक्ष हूं जो पापी और पुण्यात्मा का भेद किए बिना सबको छाया और शीतलता प्रदान करता हैं. लेकिन आपको क्या बताना, वटवृक्ष की देखरेख में लागत भी तो आती है.' यह कहते हुए उसने अपना दाहिना हाथ फैला दिया. जिगर उसकी बात को समझने की कोशिश किए बिना ही पचास रुपये का एक नोट उसकी हथेली पर रख दिया. केयरटेकर खुश होकर वहां से चला गया.

सहसा जिगर की नज़र पार्क के एक कोने से लगे दो पेड़ों के बीच की खाली जगह पर बिछी ओढ़नी पर जा टिकी. वहां एक प्रेमी जोड़ा प्रेमालाप में निमग्न था. 'एक, क्या सोच रहे हो?' उसकी ठुडढी अपनी ओर घुमाते हुए नयनतारा ने कहा. जिगर थोड़ा झेंपते हुए कहा, 'क...क कुछ नहीं, यार.' फिर, उधर से ध्यान हटाने के लिए उसने नयनतारा के माथे पर गर्मी के चुहचुहा आई पसीने की बूंदो को अपने रुमाल से पोछने लगा. लेकिन वह प्रेमालाप के उस दृश्य को देखने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा था. रह-रहकर चोरी-छिपे कनखियों से देख ही लेता. वह सांसो को नियत करते हुए बोला, 'नयन, अब दूरी बिल्कुल बदरास्त नहीं होती.' 'यार, तुम्हारे इतने करीब बैठी हूं, फिर किस दूरी की बात कर रहे हो. लो, और करीब आ गई. ' यह कहकर नयनतारा जिगर को बाहुपाश में बांधते हुए उसके गाल पर एक चुंबन जड़ दी. जिगर ने भी चुंबनों की झड़ी लगा दी. जिगर के हाथ भावावेश में आगे बढ़े जा रहे थे लेकिन नयनतारा उसके हाथों के दायरे से खुद को छुड़ाते हुए बोली 'ओह हो..जिगर, इसके गो नहीं.' लेकिन जिगर को जैसे कुछ सुनाई हीं नहीं दिया. उसका अपने ऊपर नियंत्रण ही कहां रह गया था. 'स्टॉप इट, जिगर. व्हाट आर यू डूइंग?' जिगर को पूरी ताकत से धकेलते हुए चिल्लाई. जिगर मारे शर्म के नयनतारा से आंखे नहीं मिला पा रहा था. किसी तरह बोला-'सारी नयन. पता नहीं मुझे क्या हो गया था.

' नयनतारा जिगर के कंधे पर दिलाशा का हाथ रखते हुए बोली-'यह तो मैं ही जानती हूं कि मैंने खुद को कैसे रोका. हम इतने करीब हो के दूर नहीं हो सकते. शादी के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है.' 'नयन, तुमने मेरे मन की बात कह दी. मैं अभी भी यही कहने वाला था.' जिगर बोला. उन्होंने ठान लिया कि प्यार की राह पकड़कर शादी की मंजिल तक जरूर पहुंचेगे और उन लोगों को भी हमराही बनाएंगे जिन्हें इंतकाम की कटीली राह के आगे कुछ नहीं दिखता.

जैसा कि पहले से अंदेशा था, इधर जिगर और उधर नयनतारा ने अपने-अपने फैसले से अपने-अपने अभिभावकों को अवगत कराया, तो मानों भूचाल आ गया. समर सिंह तो एक पल के लिए अपना होश हवास खो बैठे. उन्हें वह दिन अभी भूला नहीं था जब रणविजय सिंह के गुर्गे ने उनके छोटे भाई निर्भय सिंह को दिनदहाड़े गोलियों से छलनी कर दिया था. रणविजय सिंह भी कम बेचैन नहीं थे! अभी जुम्मा-जुम्मा साल भर भी तो नहीं बिता नहीं था जब समर सिंह ने उन पर जानलेवा हमला करवाया था. गोली कनपटी छूकर निकल गई थी. उस वक्त भगवान मेहरबान थे, नहीं तो आज ठकुराइन सफेद साड़ी में घूमती. लेकिन अंततः वर्षो के द्वेष पर संतान-मोह भारी पड़ गया. दोनों परिवार शादी के लिए हामी भर दिए.

हर तरफ खुशी का माहौल था. बसडीहा गांव से एक किलोमीटर दूर जब आतिशबाजी के बीच बेन्जों की सुरीली धून सुनाई दी, तो लड़की वालों को पता चला गया कि बारात अब आ चुकी है. समर सिंह मय रिश्तेदारों के साथ अगवानी के लिए लपके और फिर बारात लेकर उस आलीशान शामियाना तक आए जो घर से चंद कदमों की दूरी पर ही था. उस शामियाना के पास ही जलपान और भोजन के लिए अलग से पंडाल बना था. चूंकि रास्ते में जाम की वजह से बारात आने में विलंब हो गया था और मुहूर्त का समय कम था, इसलिए यह तय हुआ कि जलपान और भोजन के बाद शादी की रस्में जल्दी-जल्दी निपटाकर नाच-गाना का कार्यक्रम शुरू कराया जाए. रणविजय पुत्र जिगर और अपने कुछ करीबी रिश्तेदारों को लेकर समर सिंह के साथ उनके घर के आंगन में बने विवाह-मंडप में गए. कन्यादान और सिंदूरदान समेत सारी रस्में आनन-फानन में पूरी की गई. सभी लोग वापस उस शामियाना में आए जहां मनोरंजन का प्रबंध था.

पूर्वनियोजित कार्यक्रम के अनुसार, जब डिंपल रानी रंग-बिरंगी रोशनी से नहाए मंच पर नाभिदर्शना पारदर्शी परिधान में दिलकश मुस्कान बिखेरती हुई आई, तो न लोगों की सीटियों और तालियों की आवाज के आगे पहले से बज रहे बाद्य यंत्रों की धूम मद्धिम पड़ गई. डिंपल रानी ने लोगों के मन-मिज़ाज़ को पढ़कर मादक भाव-भंगिमाओं के साथ जब अपना बहुचर्चित गीत गाना शुरु किया-

'मोहे सतावे है जुल्मी जिया
आ जा पिया, आ पिया, आ पिया...'

तो ऐसा लगा कि मानो लोगों की इसी पल का इंतजार था. गीत के हर टेक पर असलहे गरज रहे थे और शामियाना चलनी का शक्ल अख्तियार करता जा रहा था.

आह....धड़ाम...हृदयविदारक चीख के साथ किसी के गिरने की आवाज आई. यह कोई और नहीं बल्कि जिगर था. अब तक जो गोलियां शामियाना छेद रही थीं उनमें से ही एक गोली ने इस बदनसीब का सिर छेद दिया था. चारों ओर कोहराम मच गया. नाच-गाना बंद करा दिया गया. लोगों को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो गया. तुरंत सबका नशा काफूर हो गया. शामियाने के एक किनारे अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ बैठे रणविजय को जब यह बात पता चली तो वह वहीं गश खाकर गिर पड़े. समर सिंह भी दौड़ते-भागते आ पहुंचे. वह अपनी गोद में जिगर का सिर रखकर लगातार सहलाए जा रहे थे और फूट-फूटकर रोए जा रहे थे. वहीं जमीन पर एक दूनाली बंदूक लेटी थी. अब तक रणविजय भी पानी के छींटे से होश में आ चुके थे और जिगर के पास ही बैठकर विलख रहे थे. चूंकि शामियाना दूल्हन के घर के बिल्कुल पास था, इसलिए नयनतारा तक भी यह बात पहुंचने में अधिक समय नहीं लगा. वह घर से बदहवास भागती हुई आई और जिगर से लिपटकर रोने लगी, कहने लगी, 'जिगर, आंखे खोलो. तुम मुझे इस तरह छोड़ कर नहीं जा सकते. हे भगवान, यह कैसा दिन दिखा रहे हो. जिगर...' लेकिन जिगर यह सुनने के लिए बचा ही कहां था. जब नयनतारा को इसका अहसास हुआ, तो उसने झटके से जमीन पर पड़ी दूनाली बंदूक उठाकर उसे अपने सीने से लगाते हुए समर सिंह से बोली, 'पिताजी, जब जिगर ही नहीं रहा, तो मेरे जीने का कोई मतलब नहीं रह जाता है. आप लोगों की मिलनी तो हो गई, लेकिन हमारी मिलनी अभी बाकी है...दूसरे जहां में होगी...जिगर.' समर सिंह और रणविजय सिंह उससे बंदूक छीनने का असफल प्रयास करते हुए लगभग एक साथ बोल पड़े, 'बिटिया, इ सब का कर रही हो. पगलाओ मत.' तभी

एक जोरदार आवाज हुई और नयनतारा निढाल हो जिगर पर गिर पड़ी. गिरते ही उसकी गर्दन एक ओर लुढक गई. हंसी खुशी का माहौल मातम में बदल गया. समर और रणविजय को जिन असलहों पर नाज था, आज उन्हीं असलहों ने उनसे उनकी संतानों को छीन लिया था. उनकी दुनिया उजड़ चुकी थी. सब कुछ खत्म हो गया था उनका. झूठी शान के नाम पर असलहों से खेलने का हश्र क्या होता है, यह बात वहां उपस्थित लोगों की समझ में धीरे-धीरे आने लगी थी. आसमान में अंधेरा छंटते देख यह लगने लगा था कि अब दिन निकलने में अधिक समय बाकी नहीं हैं. ♦

एस.एम.एस.रचना

☐शांता डायल अ नंबर.....
ए गर्ल रिसिव्ड
शांता-हलो कौन.....?
लड़की-मैं सीता.....
शांता-'ओ तेरी! ये तो अयोध्या लग गया..
सारी 'मातें........
मो०0८९५७१२४४६०

++++++++++++++++++++

♦ट्यूटर-सरदार से तुम अपने पिता का नाम अंग्रेजी मं लिखों...
सरदार-ब्यूटीफुल रेड अंडर-वियर,
ट्यूटर- क्या बकवास कर रहे हो?
सरदार-मेरे पिता का नाम सुन्दर लाल चड्ढा
मो०: ९३०७७७६२३०

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949 ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,
मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप..........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूँ. अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्नलिखित पते पर भेजें.

नाम :..
पिता / पति का नाम :..
पता :...
डाकखाना :..जनपद..
राज्य :..पिन कोड..
दूरभाष / मो0...ईमेलः...

विशेष नियमः
01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / –	$ 1.00 /
वार्षिक	रु0 110 / –	$ 5.00 /
पाँच वर्ष :	रु0 500 / –	$ 150 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / –	$ 350 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / –	$ 1500 /

नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

खण्ड काव्य

रचनाकारः
बालाराम परमार 'हंसमुख'

मूल्यः ५०/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी.-९३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र.-२११०११ मो०९३३५१५५९४९

सच्ची श्रद्धांजलि

आओ! उस मां के चरणों में हम शीश झुकाएं
जिसने हंसते-हंसते राष्ट्रदेव की प्रतिष्ठा में
स्वतंत्रता की वेदी पर, चढ़ा दिया अपना लाल
कहा, यह दो बार कंठ नहीं धरता, मनुज मरता
एक बार, मत छोड़ तू भारत की आन
मत कर तू अपने जीवन की, तनिक भी परवाह
हम उस मां के घर तिरंगा फ़हराएं
आंखें नम कर, करें नमस्कार

प्रशासन के परिसर में नहीं
कलक्टर की इमारत में भी नहीं
वीर भगत सिंह की है जहां मज़ार
कुंवर सिंह जी, जहां अपनी बांह
काटकर गंगा को अर्पण किये
पवित्र हुआ गंगा का धार

प्रशासन के परिसर में नहीं
कलक्टर की इमारत में भी नहीं
वीर भगत सिंह की है जहां मज़ार
कुंवर सिंह जी, जहां अपनी बांह
काटकर गंगा को अर्पण किये
पवित्र हुआ गंगा का धार

राजगुरू सुखदेव की मही है जहां
दुर्गा भाभी की देहरी पर, जलियॉ-
वाला की लहूलुहान परती पर
नन्हे शिशु चिना गये, आती है
आज भी जहां से, उनके रुदन की
आवाज, खड़ी है आज भी वह दीवार
चलो, चलकर वहां तिरंगा फ़हराएं
श्रद्धा-दीपों की बांधे वहां कतार

चलो कलम स्याही के
चलकर उस सेना को करें नमस्कार
जो क्रांति की कविताएं, लेख-आलेख
लिख-लिख पत्रों में, परिसंवादों में
भेजता रहा कारागारों में, बताता रहा
दुर्दिन में फंसी-क़राहती भारत मां का हाल
खाता रहा कसम, दिलाता रहा आस
ओ! स्वतंत्रता के महायग्य में अपना भविष्य
चढ़ाने वाले, खुद को अकेला मत समझना
बाहर बैठा है क़फ़न लेकर, तुझे अपने
घर से ले जाने तुम्हारा यार, चलो, चलकर
उस साधक को हम करें, नम आंखो से नमस्कार।

उससे माफ़ी मांगें, उसे बता दें, जिसका आज भी
सूरज की किरणों संग,झड़ता शौर्य प्रकाश
जब चटक रोशनी आ रही थी हमारे पास
हम समझ रहे थे, गया अंधेरा, आया प्रभात
तब तू मृत्युगढ़ पर, जयकेतु-सा खड़ा था
जल रही थी निर्भीक तेरे चिता की आग
चलो, चलकर उस श्मसान में, हम तिरंगा लहराएं
जहां से चलकर, गये हमारे वीर आकाश।

✍डॉ० तारा सिंह, मुम्बई, महाराष्ट्र

खुश रहने के ७ टिप्स

१- घृणा मत करो
२- धोखा मत दो
३- साधारण रहो
४- काम खूब करो
५- हमेशा मुस्कराते रहो
६- दूसरों की सहायता करो
७- सबको प्यार करें

मो० ०८८६७४१७५०५

शीघ्र संदेश वाहक रचना

जो कोई न समझे वो बात हूं मैं, जो ढाल के नयी सुबह लाये वो रात हूं मैं, चले जाते है लोग इस दुनिया से दूर रिश्ते बनाकर, जो कभी ना टूटे वो साथ हूं मै।

++++++++++++++++++++++++++++++++

अपनी दुनिया में यूं न खोजना, दूर रहकर हमें भूल न जाना, खबर हमारी न ले सको तो कोई ग़म नहीं, पर अपनी खबर देना भूल न जाना.

संकल्पः ०८३०५४०१२८४८

'मृत्यु' वास्तविक परम सत् (ईश्वर)

✍ **रवि शंकर विमल,**
इलाहाबाद, उ.प्र.

साधरणतया हम सभी प्रायः 'मृत्यु' शब्द को देखकर, सुनकर भयभीत महसूस करने लगते हैं. यह शब्द ऐसा है जिसे हम सुनना और देखना नहीं चाहते हैं. इस शब्द से हम दूर भागना चाहते हैं. हम लोग भगवान, गॉड, अल्लाह की पूजा करते हैं जिससे वह प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करें परन्तु मेरे दृष्टिकोण से हम वास्तविक परम तत्व से दूर जाते रहे हैं.

मृत्यु से हम हम सदा के लिए मुक्ति चाहते हैं. क्या संसार का ईश्वर मृत्यु से हमारी रक्षा कर सकता है? संभवतः नहीं. मृत्यु पर किसी का नियंत्रण नहीं है, चाहे हम अपने ईश्वर से कितनी ही प्रार्थना क्यों न कर लें. संसार के सभी व्यक्ति जो ईश्वर में आस्था रखते हैं, वे अपने ईश्वर में दयालुता, नश्वरता, सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमान आदि. परन्तु उपर्युक्त उपस्थित सभी गुण मुझे 'मृत्यु' में दिखायी देते हैं, जिससे हम दूर जाना चाहते हैं. ये गुण मुझे मृत्यु में क्यों दिखते हैं, इसका स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है-

हम अपने ईश्वर को बहुत ही दयालु, करुणामय मानते हैं. वह अपने भक्तों की रक्षा करता है और दुष्टों को दण्ड देता है. दयालुता के इस गुण में मुझे एक दोष दिखता है जोकि सर्वमान्य दार्शनिक दोष है. वह यह कि ईश्वर केवल उन्हीं पर अपनी दया करता है जो उसकी पूजा-पाठ, प्रार्थना करते हैं. वह उन पर दया नहीं करता है जो उसकी पूजा-पाठ नहीं करते हैं. इसका निहितार्थ यह है कि उसे चापलूसी पसन्द है. इस दृष्टि से संसार में मौजूद ईश्वर वास्तविक ईश्वर नहीं हो सकता.

परन्तु मेरे ईश्वर में यह दोष नहीं है. वह सभी पर एक समान दया करता है. जो व्यक्ति उसकी प्रार्थना करते हैं तथा जो प्रार्थना नहीं करते हैं, उन सभी की मृत्यु निश्चित है. अर्थात मृत्यु को चापलूसी से प्रभावित नहीं किया जा सकता.

ईश्वर में हम यह शक्ति मानते हैं कि वह सभी सांसारिक और अन्य भेदों को मिटा सकता है. परन्तु वास्तविक संसार में ऐसा है नहीं. परन्तु मृत्यु सभी प्रकार के भेद मिटाने में सक्षम है. ऐसा देखने में विदित होता है कि ईश्वर अमीरों पर ज्यादा प्रसन्न होता है और गरीबों पर कम. इसलिए उसे ईश्वर नहीं कहा जा सकता. परन्तु मृत्यु अमीरी-गरीबी नहीं देखती है. अमीर की भी मृत्यु निश्चित है और गरीब की भी.

ईश्वर के विषय में ऐसा कहा जाता है कि वह संसार में हर जगह मौजूद है, वह है किन्तु दिखता नहीं. मृत्यु भी संसार में हर जगत में मौजूद है, हमारे चारो ओर है, वह होते हुए भी दृश्यमान नहीं है. देखकर भी उसे नहीं देख पाते हैं. इस कारण भी 'मृत्यु' ईश्वर है. हम ईश्वर को सभी कष्टों का हरता मानते हैं. परन्तु मृत्यु भी सभी जीवों के सारे कष्टों को दूर कर देती है. सांसारिक ईश्वर में कई कमियां है. परन्तु क्या हमें 'मृत्यु' में कोई कमी दिखायी पड़ती है? हमारा उत्तर होगा शायद नहीं. इस प्रकार जिसमें कोई कमी नहीं है वह पूर्ण है और जो पूर्ण है वह ईश्वर है. मृत्यु पूर्ण है, अतः मृत्यु ही वास्तविक ईश्वर है. सांसारिक ईश्वर हमारा साथ छोड़ सकता है, किन्तु मृत्यु हमारा साथ कभी नहीं छोड़ती है, हम कभी भी मृत्यु को अपना सकते हैं.

जब कोई व्यक्ति हर-तरफ से निराशत हो जाता है, तब वह ईश्वर की ओर जाता है, और जब वहां से भी निराश लौटता है तब मृत्यु के पास जाता है और मृत्यु उसे अपना लेती है. मृत्यु के द्वार सभी के लिए खुले हुए हैं. शायद ईश्वर का द्वार व्यक्तियों के लिए बन्द हो सकता है किन्तु मृत्यु का द्वार सभी के लिए खुला रहता है. इसलिए व्यापक अर्थ में मृत्यु ही वास्तविक ईश्वर है. हम संभवतः ईश्वर के बहुत गुणों से अनजान या अनभिज्ञ हों, किन्तु हमें मृत्यु का ज्ञान तो है ही. वास्तव में मेरी दृष्टि से हम सदा से ही वास्तविक ईश्वर से दूर भागते रहे हैं, उससे बचने के लिए उपाय करते हैं, और अन्य ईश्वर की कल्पना करते हैं. परन्तु इससे हम वास्तविक ईश्वर से दूर भागते हैं. हम ईश्वर शब्द के सही अर्थ को नहीं पकड़ पा रहे हैं, हमने वास्तविक ईश्वर को तो 'मृत्यु' जैसा भयभीत और डराने वाला नाम दिया है.

मृत्यु तो सभी दोषों से मुक्त है, उसका कोई गुण ही नहीं है, वह तो अवगुण है, परन्तु यह कहना भी उसको सीमित करना है. मृत्यु सीमित नहीं है, वह असीमित है.

मृत्यु ही सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक है, उसे सभी जीवों और जगत का ज्ञान है और वह सब पर समान दया करती है. हम चाहें कितना भी नकारें, उसका मृत्यु का आलिंगन होकर रहेगा.

इस प्रकार समग्र मूल्यांकन करने पर सम्पूर्ण संसार में मृत्यु ही 'परम शुभ' है. 'मृत्यु' के बराबर संसार में कोई भी परम शुभ नहीं है.

कहानी

कँटीली गलियाँ

ज़ेबा रशीद,
जोधपुर, राजस्थान

गतांक से आगे

''ऐसी बात मेरे सामने भूलकर भी जबान पर मत लाना साब. मुझे ऐसी वैसी मत समझना.' वह बिफर गई.

"अरे...अरे इतनी नाराज क्यों होती है."

"यह आप बड़े लोगों की नीयत ऐसी क्यों होती है? मजदूरी पर जाने वाली औरतों के साथ गरीब मजदूर दिन भर काम करते हैं पर वे ऐसी नीयत नहीं रखते. घरों में काम करने में हमें कितनी परेशानी उठा कर करती हैं."

"अरे बस चुप हो जा...लीला सुन लेगी."

"थू है आप बड़े लोगों पर...मैं तो बाईजी का सोचकर चुप हूं. अब आपने कुछ भी कहा तो..."

मुनिया पहले से अधिक कठोर हो गई. निष्ठुर बनी उनकी ओर तीखी नजरों से देखती रही. उसकी आंखों से शोले बरस रहे थे. रामबाबू वहां से खिसक गए. उसने कांपते हाथों से काम निपटाया.

उसे अपनी बेबसी और क्रोध के कारण एकदम पसीना आ गया.

वह गैस के चूल्हे के पास खड़ी खौलते दूध को देखने लगी. गैस की धीमी आंच देखकर उसे लगा उसके अन्दर भी ऐसी ही धीमी दिखने वाली पर तेज आंच जल रही है.

वह अपने घर रवाना हुई. रामबाबू दरवाजा बन्द करने आए.

"याद रखना मेरा काम....नहीं तो तुझे...." उसके मुंह पर सिगरेट का धुंआ छोड़ते हुए कठोर शब्दों में बोलते हुए उसके कंधे पर हाथ रखकर हल्का सा दबाया.

अकस्मात् अविश्वसनीय मुद्रा देख मुनिया चौक गई. उसके हाथ का स्पर्श अनुभव करते ही उछल दूर हो गई. उसका खून खौल गया. धड़कन बढ़ गई. क्रोध से उसके मन की स्थिति विकृत हो गई. एक असामान्य क्रोध जाग्रत हो गया.

आज तो मेरे हाथ भी लगा दिया. अपमान व मजबूरी....क्रोध से उसका पूरा जिस्म कांप रहा था. वह उस पर बरस पड़ना चाहती पर लाचार थी.

इस परिवार को लोग आदर्श परिवार कहा करते हैं. पत्नी अस्वस्थ सी खाट पर पड़ी रहती है. फिर भी बहुत ख्याल रखती है. ऐसी तो वह कल्पना कर ही नहीं सकती है. पत्नी के सामने इतना उदार भाव रखता है, वह ऐसा भी है.

उनके घर से बाहर निकलते ही मुनिया का हौंसला आंखों से झरने लगा. घर पहुंचने से पहले सामान्य होना भी जरूरी था.

सड़का पर धूल पसरी थी और सड़क सूनी पड़ी थी. असीम कड़वाहट से उसने फैसला कर लिया कि बस अब यह कुछ हरकत करेगा तो निपट लेगी. गरीब हूं पर बिकाऊं नहीं.

गरीब मजबूर औरत का ये सम्पन्न लोग....बड़े लोग राह में पड़ी धूल समझते हैं....ये नहीं जानते कि यह राह में पड़ी धूल कभी तपती रेत बनकर पैर झुलसा सकती है.

वह बेहाल सी खोई-खोई लेटी थी. कभी गुस्सा आता तो कभी उसके इशारे याद आने पर बरबस उसके होठों पर मुस्कराहट आ गई.

खिड़की से हवा का झौंका आ उसके बदन को छू गया. वह अंगड़ाई लेने लगी. उसकी शिराएं कसमसा उठीं. गहरी सांसे सीने में हलचल मचाने लगीं.

"मुनिया तू मुझे बहुत प्यारी लगती है. तूने मेरा दिल चुरा लिया है."

सिर पर सफेद बाल....उम्र साठ साल और......बुढ़ापे में इश्कबाजी.

दुनिया के सामने सज्जन कहलाने वाले मन में इतने काले....इतने नीच... लम्पट. यह तो कुत्ते की तरह मेरे पीछे पड़ गया है.

अगर मैं सचमुच अपने जिस्म की आवाज सुनती तो क्या कमी रहती है? जाने कब मैंने अपनी जिम्मेदारियों के आगे अपनी इच्छाएं गरत में दफन कर कर दी. मजबूरी भरी रेत की परत के नीचे गहराई से. अब तो कुछ चिनगारियां ही शेष हैं.

एक युग बीत गया. कंटीले पथरीले मैदानों व गलियों को पार कर इतनी कठिन जिन्दगी का सफय तय कर रही हूं.

अगर इनकी पत्नी से कह दूंगी तो यह भी क्या कर लेगी?

पुरुषों के साथ औरतों को अपने व्यवहार से बड़ी चतुराई और कौशल से प्रयुक्त करना होता है. मैं खुद ही निपट लूंगी. अपने बलबूते पर ही तो मैं सब घरों में खुद को बचाती आई हूं.

उसने दीर्घ श्वास लिया. अपने बदन को ढीला छोड़ दिया. बाहर कुत्ते भौंक रहे थे. कुछ काम वाली बाइयों को मर्दो की जेब से खेलना अच्छा लगता है. लेकिन मैं तो अपने पति के लिए. ...अनमोल....अछूती.....बेवफा मुस्कान हूं, मुझे अपने स्त्री धर्म से प्यार हैं.

उसे खोई-खोई देख रघुआ ने पूछा, "इतनी परेशान क्यूं है, क्या हुआ?" वह चुप रही. भरी-भरी आंखों से पति को देखा.

"किसी ने कुछ कहा क्या?"

बादल उमड़ने-घुमड़ने लगे. मन में अंधड़ व बादलों का शोर होने लगा. "जवाब दे किसी ने तूझे कुछ कहा?"

रघुआ चीखा. वह रोने लगी. उसने पूरी बात बताई.
“वो थने की कैयो तो तू पलट’र झापट क्यूं नीं दियो?” वह लाल पीला होने लगा.
“म्हैं डरगी क काम छूट जासी...म्हारा तीन रुपिया डूब जावैला.”
“तू झूठी है. तू बहाना करे....तू तो खुद रोवती फिरनी चावै.” रघुआ का पारा चढ़ गया.
मुनिया ने गुस्से से तड़पकर पति को देखा. कितनी कड़वी बात कह गया. उसका खून खौल गया. चेहरा तमतमाने लगा.
“विश्वास राखो आठ दिन सूं पईसा मिलता ई म्हैं काम छोड़ दूंला.” खुद को संयत किया. “तेरे दिल में कुछ नहीं है तो उसे जुत्ते मार...”
“म्हारा सूं तो नीं मारीजें....थै...क्यूं नीं मारो?” उसने पूछा, “थै म्हारा पति हो...म्हारी रक्षा करो.”
“वो थनै छेड़ी है...तू ई जूता मार.. सीताजी भी तो परीक्षा दीवी ही...तू भी दें.”
रघुवा शराब के नशे में जिद करने लगा.
वह हैरत से उसे देख रही थी.
परीक्षा...? किस बात की परीक्षा. क्यों दूं मैं परीक्षा.
“जा वण नै ठोक’र आ...बिगड़ेल .. .कमीनी...जा...” रघुआ नशे में गालियां बोलता गया और उठकर उसे मारने लगा.
“अरे मुझे क्यों मार रहे हो...पागल हो गए क्या? मुझे ऐसा काम करना होता तो तुम्हें क्यों बताती.”
“मैं कुछ नहीं जानता...निकल मेरे घर से.”
“जरा सोचो, मैं उसे मारूंगी तो लोगों में बात बनेगी. मेरी भी इज्जत जायेगी. दूसरे घरों से भी काम छूट जायेगा.”
“मैं कुछ नहीं जानता बस. जूता मारकर परीक्षा दे सीताजी भी तो परीक्षा दी ही. ..तो तू कोई लाट साब है. ले म्हारो जूतो...जा....नहीं तो निकल मेरे घर से....” वह नशे में जिद करने लगा. “नहीं चाइजे म्हने आवारा लुगाई...”
मुनिया अपने अन्दर की पीड़ा और त्रासदी में गोते लगाने लगी. वह आवेश में कांप रही थी. उसकी आंखों से समूचे पुरुषों के चिनगारियां बरस रही थी. “क्या जरूरत थी सीता को परीक्षा देने की? सब जानते थे कि वह बेकसूर थी. औरत ही क्यों दे परीक्षा? क्या पुरुष ने कभी दी परीक्षा... क्यों नहीं देता पुरुष परीक्षा. गुनाह पुरुष करता है और दोष औरत पर थोप दिया जाता है.”
उसका अन्तःकरण कितनी व्यथा तथा वेदना से भरा है. वह बहुत उद्विग्न हो गई. क्रोध से भरी मुनिया रामबाबू के घर की तरफ चल दी.
“सब मर्द एक से ही होते हैं क्या, आदमी और क्या भगवान.” वह बड़बड़ाई.
रामबाबू अपने मित्र के साथ घर के सामने खड़े थे.
क्रोध से भरी मुनिया ने उन्हें मारना शुरू कर दिया. आस-पास लोग इकट्ठा होने लगे.
“अरे यह क्या कर रही हो....एक भले आदमी की इज्जत क्यों बिगाड़ रही है?” राम बाबू के मित्र ने उसका हाथ पकड़ कर रोका.
जैसे वह भी सोते से जागी. उसके हाथ से जूता छूट गया. उसे कुछ नहीं सूझ रहा था. वह सड़क पर खड़ी हांफ रही थी.
रामबाबू शरम से पानी-पानी हो गए. उसका दिमाग तेजी से काम कर रहा था. “एक तो इसने मेरी जेब से सुबह पांच सौ रुपये निकाल लिए....थोड़ा कह दिया चोरी क्यों की तो आ गई मेरी इज्जत बिगाड़ने.” रामबाबू ने कहा.
“पुलिस में दो इसे ....चोटी...” उनके मित्र ने कहा.
“ये कामवाली बाईयां होती ही बदमाश है. इनको कोई लाज शरम तो होती नहीं है.” एक ने कहा.
“हां शरीफ होती तो किसी ने कुछ कह भी दिया तो सहन करके चुपचाप घर में बैठ जाती...न की सड़क पर तमाशा करती.”
“अरे यार ये तो घर-घर झांकती फिरने वालियां है फिर भी अपने आपको शरीफ कहती हैं. दे दो पुलिस में...”
वह दौड़ती हुई अपने घर आई. चटाई पर गिरकर रोने लगी.
बड़े लोग झूठ बोले तो वो ही सच बन जाता है.
समुद्र में तूफान उठते हैं बहुत आवेग होता है. लहरे किनारे पर आकर पसर जाती है. जैसे आवेग से धरती में समा जाना चाहती है. वह भी धरती में समा जाना चाह रही थी.
“ये बड़े लोग हम गरीबों के दुश्मन होते हैं. मेहनत मजदूरी करने वाली औरतों को बुरी नजर से देखते हैं. इनके घर की औरतों को हम इज्जत देते हैं. इनके घरों में रहने वाली कई शरीफजादियां....गली-गली घूमता हूं हमसे कुछ नहीं छुपा है..हम लोग गरीब हैं, मजबूर हैं. कितने लाचार.. ...बेबस हैं.” रघुआ एक तरफ बैठा बड़बड़ा रहा था.
पत्नी के दुःख से दुःखी होकर रो रहा था. अचानक कोठरी का दरवाजा खुला. पदचाप सुनी तो मुनिया ने सिर उठा कर देखा. वह चौक गई. “यह रही चोट्टी...इसी ने चोरी की है....निकाल मेरे रुपये....चोट्टी.” रामबाबू दहाड़े. वह अवाक बैठी देखती रह गई. “देख

अधिक नाटक करने की जरुरत नहीं है. इनके रुपये निकाल दे नहीं तो थाने ले जाऊंगा." सिपाही के मुंह पर कुटील मुस्कान थी. उसे तो सब मालूम था कि माजरा क्या है. पचास रुपये लेकर जेब गर्म की है.

रघुआ हाथाजोड़ी करने लगा. पैर पकड़ने लगा. मुनिया पत्थर बनी बैठी थी. एकाएक उस पर आसमान टूट कर आ पड़ा.

"चोट्टी!"

"चोट्टी रांड....ध्यान रखना मुझे रुपये वसूल करने आते हैं. रात मक रामबाबू के पांच सौ रुपये पहुंचा देना नहीं तो कल थाने ले जाऊंगा." सिपाही ने दरवाजे पर डंडा बजाया और कहते हुए बाहर चल दिया.

भीड़ इकट्ठी होने लगी. सिपाही व रामबाबू के कहे कठोर शब्द मुनिया के कानों में गूंज रहे थे. "तो...?" बिच्छु ने डंक मार दिया और मेरी जिन्दगी का कांच का प्याला तड़क ही गया. ये निशान अब कभी नहीं मिटेंगें.

सामने रोशन दान में एक कबूतर बैठा पंख फड़फड़ा रहा था.

मौत क्या है?

♦मौत सदा की नीद है.

♦मौत हमेशा की जुदाई है.

♦मौत हमेशा की खामोशी है.

♦मोत दुनिया के झगड़ो का निपटारा है.

♦मौत आत्मा और शरीर का अलग होना है.

♦मौत रूपी बीमारी का कोई इलाज नहीं हैं.

♦मौत का राज आज दिन तक कोई नहीं जानता है.

मौत कुदरत के करिश्मा है मोत का कोई जवाब नहीं है.

-भैरू लाल नामा,
बाड्मेर, राजस्थान

कुछ बातें सब्जियों की

■सब्जियां हमारे आहार का एक मुख्य हिस्सा हैं. स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है कि भरपूर मात्रा में इनका सेवन किया जाए. सब्जियों के बारे में कुछ टिप्सः

■आलू और प्याज को छोड़कर अगर संभव हो, तो अन्य सब्जियों की खरीदारी एक ही बार में न करें. रोज सब्जी खरीदने से आपको हमेशा ताजी सब्जियां मिलेंगी.

■सब्जियों को बहुत छोटे-छोटे टुकड़ों में न काटें. इससे उनके पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं.

■लोहे के चाकू से ही सब्जियों को काटें. इससे आयन का कुछ अंश सब्जियों में भी चला जाता है, जो शरीर के लिए उपयोगी होता हैं.

■हरी सब्जियों को ज्यादा देर तक चूल्हें पर न चढ़ाए रखें. इससे उनके विटामिन नष्ट हो जाते हैं.

■आलू-प्याज को अंधेरे में ही रखें. इससे लंबे समय तक वे सड़ते-गलते नहीं हैं.

■पत्तेदार या हरी सब्जियों को अगर फ्रीज में रखना हो, तो अखबार में लपेट कर ही रखें. इससे उनकी ताजगी अधिक समय तक कायम रहती है.

■टमाटर यदि नरम हो गए हों, तो उन्हें ठंडे पानी में डाल दें या फ्रीज में रख दें. टमाटर सख्त हो जाएंगें.

■करेले में अमचूर लगाकर रातभर के लिए छोड़ दें. इससे सब्जी बनाने पर करेले की कड़वाहट कम हो जाएगी.

■भिंडी की सब्जी बनाते वक्त उसमें एक-दो चम्मच दही मिला दें. इससे सब्जी का लसलसापन कम हो जाएगा.

■हरी सब्जियों में अन्य सब्जियों से अधिक मात्रा में विटामिन और खनिज-लवण पाए जाते हैं.

जंग के दाग गायब

कपड़े पर जंग के दाग-धब्बे लग जाएं, तो इन नुसखों को आजमाएं

■ कपड़े पर अगर जंग के दाग-धब्बे लग गए हों, तो फटे हुए दूध को उस जगह पर रगड़े. धब्बे साफ हो जाएंगें.

■ जंग के धब्बों पर नमक लगाएं और फिर उन पर नीबू रगड़े. धब्बे गायब हो जाएंगें.

■ दही और नीबू का रस मिलाकर दाग वाली जगह पर लगाएं. थोड़ी देर बाद गरम पानी से धो लें. दाग नजर नहीं आएगा.

सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना पर)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना) अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में, **प्रवासी भारतीय सम्मान**-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों. एक रचना की तीन प्रतियां, **हिंदी सेवी सम्मान**-(विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक)- किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **राजभाषा सम्मान**-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए. विस्तृत विवरण तीन प्रतियों में, **राष्ट्रभाषा सम्मान**-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-संबंधित विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **कला/संस्कृति सम्मान**-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेंटिग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए, विस्तृत विवरण तीन प्रतियो में, **बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियो में, **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में. **राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, **पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**- पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना तीन प्रतियों में, **सांस्कृतिक विरासत सम्मान**- ऐसे व्यक्ति/संस्थाएँ जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में, **विधि श्री**-विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने वालों को प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **डॉक्टरश्री**-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **शिक्षक श्री**-शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **सैनिक श्री**-सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी की सेवा प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **विज्ञान श्रीः** विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **प्रशासक श्री**-ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा दे रहे हो, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित १०० पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र मेंः** साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री

विशेषः१. प्रविष्टि के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. सम्मान में प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जायेगी. जो जनवरी २०१३ से लागू होगी.

३. प्राप्त पुस्तकें/रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएंगी. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक

पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा.

४. सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

५. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा.

६. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

७. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१२

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.

मो०: ०९३३५१५५९४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतू प्रविष्टि

संदर्भः

महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले.. सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत है:-

नाम : ....

पिता/पति का नामः..

पताः..

....

दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-..........................

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...

विधा....................वर्ष.........................प्रेषित प्रतियाँ..............

धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि......................बैंक का नाम...........................संख्या.........................

....

मैं शपथ पूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मैं उन्हें स्वीकार करता/ करती हूँ

भवदीय/भवदीया

हस्ताक्षर....................................

पूरा नाम....................................

प्रस्तावक

नाम..............................

पूरा पता.......................

हस्ताक्षर..........................

सलंग्नक

०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति   ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक   ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक

०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

मां

मां के आंचल में ममता का महासागर
मां का त्याग-सहिष्णुता जग उजागर।
मां की छत्रछाया प्रभू का अतुल वरदान
न्यारी मां मैरी मां घर-आंगन की शान।।

मां तेरा ऋण कभी न चुका पाउंगा
मेरा जीव तेरा तेरा ही कहलाउंगा।
तुने तो जाने क्या क्या त्याग किया
तु गिले में सोइ, मुझको शैज दिया ।।

सर्वप्रथम मां ने त्यागा नाना का धर
जब सजधज पिता पहूंचे बन कर वर।
फिर त्यागा मामा से रिस्ता तेरा-मेरा
जब अग्निसाक्ष पिता ने लिया सात फैरा।।

फिर त्यागा मां ने बचपन का उपनाम
सिंदूर मांगभर धारण किया पतिनाम।
फिर त्यागी अन्न बिखेर नाना की चौखट
वधु बन बांधे रिस्ते सुसराल की चौखट।।
फिर त्यागी मां ने बचपन की मधुर यादें
सखी सहेली घर-आंगन की मधुर बातें।
इसतरह स्वघोषित नाना की बेटी मेरी मां
दादा की बहू, चाचा की भाभी, मैरी प्यारी मां।।

दूनिया जागी जब मैने हूंकारी किलकारी
प्रखरता से उभरी काया मां तेरी बलिहारी।
मैं सहसा बन बैठा मां की ममता का बैटा
नाना का नातिन, दादा-दादी का पोता।।

बुआ का भतिजा, देश का नागरिक न होता
अगर जन्म के बाद मां का दूध पीया न होता।
हुआ संस्कारों का बीजारोपण व स्व-सरोकार
मां तुने जन्म-दिया, तेरा कोटी कोटी आभार ।।

बालाराम परमार 'हंसमुख'
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, नांदेड, महाराष्ट्र

करना हो तो करो

बाते करना हो तो अनुभव की बाते करो
सुनने की मन रहे तो सदुपदेशा सुनो
तैरने की इच्छा हो तो ज्ञानसागर में तैरो
स्वीकार करने की इच्छा हो तो सद्गुणों को स्वीकार करो।
बाते करने की मन रहे तो सत्य की बातें करो
चलने का मन हो तो सन्मार्ग (अच्छे मार्ग) पर चलो
निगलने का मन हो तो क्रोध को निगलो
त्यागने की भावना हो तो दुगुर्ण को त्यागो
तु गिले में सोइ, मुझको शैज दिया ।।

एस.एम.एस. रचना

डाक्टर-(मरीज से) तुम पहले बूरी खबर सुनना चाहेगे या अच्छी खबर.
मरीज-अच्छी खबर
डाक्टर-तो सुनो तुम्हारे दांत एकदम ठीक हैं, लेकिन मसुड़े उतने ही खराब है की सारे दांत निकालने पड़ेगें.मो०८७३८००१९९१
++++++++++++++++++++++++++++++++++++
आज खुदा से मुलाकात हुई, थोड़ी ही सी पर बात हुई, मैंने आपके बारे में पूछा ये इंसान कैसा है?
खुदा बोले-रिश्ते बनाये रखना ये बिल्कुल मेरे जैसा है।
०९८४४८५७४८०

किरण

हम ज्ञानी है हमारा ही राज्य
समाज को प्रगति करते हुए
कर्म में अंधकार भरा है
तब समाज में एक किरण आया
अंधकार दूर करना, भेदभाव को दूर करना
स्त्री से पुरुष ऊंचा ये भावना दूर करके
राजमार्ग निर्माण करने की
क्रांति का अग्नी भस्म करके
बलिष्ठ समाज में कायक ही कैलस
समझकर एक किरण हजारो ज्योति जगा दी
गर्व अहंकार मिट गया
बसवेश्वर का नाम अमर हुआ

जे.बी.नागरत्नमा, हिन्दी प्रचारिका, कर्नाटक

एस.एम.एस. रचना

७ आसमान, ७ जन्म, ७ समन्दर, ७ रंग इन्द्रधनुष के, ७ सुर संगीत के, ७ फेरे शादी के, ७ दिन शपथ के. ९८७३४८९८१७
++++++++++++++++++++++++++++++++++
कुछ रिश्ते ऊपर वाला बनाके भेजता है, कुछ रिश्ते लोग बना लेते हैं, वो लोग बहुत ही खास होते है, जो बिना रिश्ते निभा जाते हैं.
संकल्प- ८३०५४०१२८४

राजधानी का नज़ारा

दिल्ली सरकार का इशारा देखिये।
आज राजधानी का नज़ारा देखिये।।
संविधान पै भी आज वार हो रहा।
लोकतंत्र पै कड़ा प्रहार हो रहा।।
नेता देश के लिये ही भार हो रहे।
राष्ट्र के आदर्श तार तार हो रहे।।
देश भ्रष्टाचार से भी हारा देखिये।
आज राजधानी का नज़ारा देखिये।।
अन्ना देशवासियों के अन्ना रहेंगे।
देश के सन्यासी भी चौकन्ना रहेंगे।।
जनलोकपाल बने देश के लिये।
बने जो प्रारुप हो स्वदेश के लिये।।
देश को बनेगा ये सहारा देखिये।
आज राजधानी का नज़ारा देखिये।।
देश भ्रष्टाचार में ये डूब रहा है।
आम आदमी भी आज ऊब रहा है।
धरती कृतघ्नता से पाटी जा रही।
गोमाता भी भारत में काटी जा रही।।
अनशन ही बचा किनारा देखिये।
आज राजधानी का नज़ारा देखिये।।
जागो युवाशक्ति तुम्हारा स्वेदश है।
किरण वेदी सी देवियों का देश है।
भ्रष्टता से मुक्ति आज देश मांगता।
सारा देश अपना स्वदेश मांगता।
अन्ना जी हमारे हैं ये नारा देखिये।
आज राजधानी का नज़ारा देखिये।।
निर्णय स्वयं नहीं लाती सरकार।
मुश्किल पुलिस की बढ़ाती सरकार।।
युवा बाल गृह भी ये होरंगे नहीं।
हथियार शान्ति का ये डारेंगे नहीं।।
केजरी प्रशान्त शान्ति-धारा देखिये।
आज राजधानी का नज़ारा देखिये।।
संसद बनाती जन-संसद है ये।
सरकार जाती वह संसद है ये।।
आम जन पै न शाहंशाही चलेगी।
जनतंत्र में न तानाशाही चलेगी।।
आज राष्ट्र की विचारधारा देखिये।
आज राजधानी का नज़ारा देखिये।।
जन जन को ही जन लोकपाल है।
सरकारी लोकपाल में बवाल है।।
आज देश को आजादी खास चाहिये।
आजादी का पूरा इतिहास चाहिये।।
अन्ना जी के साथ देश सारा देखिये।
आज राजधानी का नज़ारा देखिये।।

✍ **लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'**, छतरपुर, म.प्र.

गीत

क़लम ने जो लिखे अक्षर तुम्हारे नाम करता हूं।
शहीदों! मैं तुम्हारी याद को प्रणाम करता हूं।
तुम्हीं ने क़ौम को इक ज़िन्दगी का ख़ून बख़्शा है।
सियासी सोच को भी इक नया मज़मून बख़्शा है।
अगर हाकिम ने हम को झूठ का फरऊन बख्शा है
तो तुमने मौत को भी इक नया कानून बख्शा है।
तभी कुर्बानियों का जिक्र सुबह-ओ शाम करता हूं।
शहीदों मैं तुम्हारी याद को प्रणाम करता हूं।
तुम्हीं तो क़ौम ख़ातिर अपना घर बार भूले थे।
बुजुर्गों और माता पिता का परिवार भूले थे।
हंसी बच्चों की भाई बहिनों के मनुहार भूले थे।
जो जीवन संगिनी थी उसका सच्चा प्यार भूले थे।
मैं मन की भावनायें इसलिये ही आम करता हूं।
शहीदों! मैं तुम्हारी याद को प्रणाम करता हूं।
दिखाई तुमने जो बलिदान की राहें नहीं भूले।
जिन्होंने दी बलि बेरों की वो मायें नहीं भूले।
तुम्हारे घर के आंगन की भी वीरानी नहीं भूले।
तुम्हारे बच्चों की आंखों का हम पानी नहीं भूले।
तुम्हारे नाम के हर लफ़्ज को उपनाम करता हूं।
शहीदों! मैं तुम्हारी याद को प्रणाम करता हूं।

✍ **सरदार पंछी,** लुधियाना, पंजाब

एस.एम.एस. रचना

भगवान हर एक के घर जाकर उसे प्रेम नहीं दे सकते, इसलिये उसने मां बनाई, उसी तरह हर एक के घर जाकर सजा नहीं दे सकते इसलिए उसने बीबी बनाई.

श्याम किशोर सिंह ६३३५१५८९५६

पत्नी-(पति से)- मैंने तुम्हें बिना देखे शादी की, कैन यू विलीव?
पति- और मेरी हिम्मत तो देखो, मैंने तुम्हें देखने के बाद भी तुमसे शादी की मो० ६४५४०६७५३५

देश भक्ति गीत

जो भी अपने देश की खातिर
अपना खून बहायेगा।
उसकी याद के गीत जमाना
युगों युगों तक गायेगा।।
जब तक तन में प्राण
बहुत मोहक लगता संसार।
मानव की अतृप्त पिपासा
करती भौतिकता से प्यार।।
जो भौतिक सुख त्याग
वतन पर न्यौछावर हो जायेगा।
उसकी याद के गीत
जमाना युगों युगों तक गायेगा।।
स्वर्ण मयूखें बलिदानी की
वेदी पर रुकती हैं
अखिल विश्व की तेज निगाहें
सुबह शाम झुकती हैं।
अवनि देगी आशीष जिसे
तो अम्बर शीश झुकायेगा।
उसकी याद के गीत जमाना
युगों युगों तक गायेगा।।
मातृभूमि के कण कण से
जिसकी गूंजेगी गाथा।
केवल गाथा को पढ़कर
ठनकेगा दुश्मन का माथा।।
जिसकी वीर कथायें सुनकर
शत्रु सुमन चढ़ायेगा।
उसकी याद के गीत जमाना,
युगों युगों तक गायेगा।

✍ **हरिचरण वारिज,** भोपाल,म.प्र.

एस.एम.एस. रचना

क्यों मेरा दिल दुखाते हो, क्यूं मुझसे हर बात छुपाते हो, मेरा तो दिल ही दूर गया ये सूनकर की, आप गोरे होने के लिए बीम बार से नहाते हो-**मो.०७८६००३५३११**

++++++++++++++++++++

किसी को इतनी ही अहमियत तो जितनी वो तुमको देता है, अगर कम दोगे तो मगरूर कहलाओगे और अगर ज्यादे दोगे तो खुद गिर जाओगे.

श्याम किशोर सिंह, ६३३५१५८६५६

विश्व युद्ध पानी का होगा

लोगों आंखे खोलो
वरना घर घर युद्ध पानी का होगा।
घटता जाता है जल स्तर दिन प्रतिदिन
सूख रहे है कुंए, बावडी हर पल छिन
अब तो इसकी सुधि ले लो
वरना मुहल्लों में युद्ध पानी का होगा।
खबर नहीं है चलता ही जाता है नल
प्यासे तड़प रहे है, पर फैल रहा जल
प्रति व्यक्ति उपयोग जांच लो
वरना नगर नगर युद्ध पानी का होगा।
संकट बहुत बड़ा है, पर अनदेखा है
सुविधा में डूबे लोगों का लेखा है
अब तो जल स्तर नापो,
वरना प्रांत युद्ध पानी का होगा।
किचिन बाथरुम का जल यूं ही बहता है
वर्षा जल भी यही कहानी कहता है
यह जल छानो, तोलो
वरना देश युद्ध पानी का होगा।
ताल-तलैये खूब करो चौड़े गहरे
जिससे इनमें पीने का पानी ठहरे
जल को शुद्ध बना लो
वरना राष्ट्र युद्ध पानी का होगा।
वर्षा जल जो छत पर हो सकता संचित
उसे पाइप से उतार,
भूमि को करो अर्पित
हंसो नहीं कुछ रोलों
वरना अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध पानी का होगा।
चैक डेम निर्माण करो श्रमदान करो
पेड़ लगाने का भी कार्य महान करो
बादल को आकर्षित कर लो
वरना अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध पानी का होगा।
बिजली बनती है पानी से ध्यान रहे
अब बिजली से जीवन में प्राण रहे
जल ही जीवन है, समझो
वरना विश्व युद्ध पानी का होगा।
जल प्रदूषण वायु प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण
सबसे छुटकारा पाना होगा
गंदगी दूर भगाना होगा
सर्व जन सहयोग जुटाना होगा।
राम अवतार शर्मा की मानो,
पौधे खूब लगाओ
वर्षा होवे झमझमाझम
अन्न धान उपजाओ
वरना एक युद्ध पानी का होगा।
यदि अभी भी नहीं चैते तो
दस बाल बाद पानी
शहद के भाव बिकेगा
इसलिए उठो जागो और भागीरथ प्रयास में भाग लेकर रामअवतार शर्मा का साथ दो।
जय जल, जय जीव, जय भारत।

✍**राम अवतार शर्मा,**आगरा, उ०प्र०

ऐ जवानों

ऐ जवानों तुम्हारी जवानी बढ़े
दिन में दूनी बढ़े रात में चौगुनी।
तेरी हुंकार से आसमा तक हिले
दुश्मनों का हो दिल चुरकुनी-चुरकनी।
जन्म-भू, मातृ-भू है तुम्हारी ललन
जिसका प्रत्येक कण देश का प्राण है
इस तरफ जो भी नापाक नज़रे उठे
याद कर तुझको अरि में उठें झुंझुनी।
रण का प्यासा कोई गर बढ़ाये कदम
उसके सीने पे चढ़ दांत गिन लीजिए
ये दुआएं तुम्हें है भरतवंश की
अपने गौरव की गाथा है तुमने सुनी
विश्व में हमसे बढ़कर न आदर्श फिर
अन्य के कुण्ड में क्यों रमाये धुनी?
वेद गीता रामायण तेरे पास हैं
हो नहीं सकते जग में कभी अवगुनी।
राष्ट्र संस्कृति सुसंस्कृत है सम शिव-शिवा
राज की बात को कर न तू अनुसनी।

✍ **राजनारायण पाण्डेय,**
राबर्टसगंज, सोनभद्र, उ.प्र.

नाभी को देखकर आप बता सकते हैं

समुद्रिक शास्त्र, भारतीय ज्योतिष का एक प्रमुख अंग है. मनुष्य के विभिन्न अंगो की सरंचना व पुरुष के नाभि को देखकर आप उस व्यक्ति के बारे में बता सकते हैं.

१.दक्षिणावर्त नाभि शुभ मानी जाती है, और वामावर्त नाभि अशुभ मानी जाती है, गहरी नाभि सुख और भोग से युक्त करती है तथा ऊंची नाभि माता का विनाष करने वाली होती है.

२.जिस व्यक्ति की नाभि ऊंची व गहरी होती है, उस व्यक्ति का विवाह किसी धनाढय स्त्री के साथ होता है. ऐसे जातक सौन्दर्य के पुजारी मानते जाते हैं तथा इन्हें अचानक धन प्राप्ति की भी सम्भावनाा रहती है. ये स्वभाव से काफी मिलनसार व मददगार होते हैं.

३.यदि किसी व्यक्ति की नाभि उठी हुई हो तो, वह मनुष्य अपने वैवाहिक जीवन से परेशान रहता है तथा कुछ ऐसी परिस्थितियां भी आ सकती है कि तलाक देने तक की नौबत आ जाये. अतः ये जल्दबाजी में आकर विवाह का निर्णय न लें तो हितकर रहेगा. समय का प्रबन्धन करना इनके स्वभाव में शामिल होता है.

४. जिस पुरुष की नाभि समतल व सामान्य अवस्था में हो, वह व्यक्ति बुद्धिमान, विद्वान व सौभाग्यशाली होता है. ये प्रत्येक सम्बन्ध को दिल से निभाने का प्रयास करते हैं, परन्तु लोग इनके साथ छल-कपट की भावना रखते हैं. इनकी पत्नी खुले विचारों वाली व स्पष्टवादी प्रकृति की होती है.

५. यदि किसी मनुष्य की नाभि ऊपर की ओर उठी हुई हो तो, वह व्यक्ति स्वयं तो जीवन में काफी सघर्ष करता है परन्तु उसकी सन्तानें अत्यन्त होनहार होती है. इनके जीवन में धन कमाने के कई अवसर आते हैं परन्तु आत्मा इन्हें अनुमति नहीं देती है. विश्वसनियता का नैतिक गुण इनमें विद्यमान होता है जिसके कारण लोग इनका काफी मान-सम्मान भी करते हैं.

६. जिस पुरुष की नाभि नीचे की ओर झुकी हुई हो, उस व्यक्ति की कन्यायें अधिक होने की सम्भावना होती हैं. इनकी पहली पुत्री भाग्यशाली होती है जिसके आने से इनके जीवन में सुख व समषद्धि आती है.

पेट आकलन-१. जिस पुरुष के पेट में एक वलि हो, वह व्यक्ति शास्त्रों में पांरगत माना जाता है. दो वलि वाला मनुष्य स्त्री को भोग करने वाला होता है, तीन वलि वाला पुरुष आचार्य होता है, चार वलि वाला व्यक्ति अधिक पुत्रों वाला होता है तथा वलि रहित पुरुष राजा के समान सुख भोगने वाला होता है.

२. यदि किसी व्यक्ति का पेट ऊंचा हो, वह मनुष्य भौतिक सुख-सुविधाओं का आदी होता है तथा ऐसे मनुष्य स्त्रियों के भोगी भी होते हैं. धन-धान्य की कमी इनके जीवन में नहीं होते हैं, परन्तु उसका उपयोग ये सही तरीके से नहीं करते हैं. इनकी पत्नी सुन्दर व सुशील होती हैं. समय का दुरुपयोग करना इनकी आदत में सुमार होता है.

३. जिस पुरुष का पेट गोल होकर आगे की ओर झुका हुआ हो, वह मनुष्य विवाह के पश्चात ही धन का अर्जन कर पाता है तथा उसके जीवन में स्थिरता आती है. ऐसे व्यक्ति स्वहित के बारे में ही चिन्तन व संघर्ष करते हैं. अनावश्यक वस्तुओं पर व्यय करना भी इन्हें उचित नहीं लगता है.

४. यदि किसी मनुष्य का पेट शरीर की अपेक्षा अधिक मोटा हो तो, वह व्यक्ति धन-धान्य व सुख-सुविधाओं से युक्त होकर सुखमय जीवन व्यतीत करता है. ऐसे व्यक्ति अत्यधिक आलस्य के कारण किसी गम्भीर रोग का षिकार भी हो सकते हैं, अतः सावधानी रखें. मीठी वस्तुयें खाना इन्हें बेहद रुचिकर लगता है परन्तु इनसे परहेज करें.

५. जिस व्यक्ति का पेट शरीर के अनुसार सामान्य व पतला हो, वह पुरुष सफल अवश्य होते हैं, परन्तु इन्हें सघर्ष अधिक करना पड़ सकता है. ४०वर्ष की आयु के पश्चात इनकी अचानक कोई मदद कर देता है जिसके कारण अपने मुकाम को हासिल करने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं.

एस.एम.एस. रचना

खिले गुलाब का मुरझाना बूरा लगता है, मोहब्बत का यूं मर जाना बूरा लगता है, फासले मिटाना अच्छी बात है, पर किसी और का उनके नज़दीक जाना बूरा लगता है

मो०९३८९७९०५७७

डॉ० लाहा को अभिनंदन पत्र

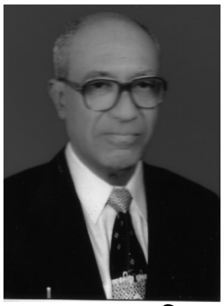

पत्र लेखन, लघु कथाओं के साथ चिकित्सा के क्षेत्र में महारत हासिल किए मध्य प्रदेश के साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा को राष्ट्रीय पत्र लेखक मंच, ग्वालियर ने अभिनंदन प्रशस्ति पत्र प्रदान किया. डॉ० लाहा को पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

शबनम साहित्य परिषद द्वारा उपाधियां घोषित

साहित्य सेवा हेतु समर्पित शबनम साहित्य परिषद द्वारा साहित्य सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-१२ की घोषणा कर दी गई. निजाम उस्ताद सम्मान श्री गाफिल स्वामी, अलीगढ़, उ.प्र., व नवल जायसवाल, भोपाल, म.प्र., महिला लेखिका के लिए फातिमा स्मृति सम्मान श्रीमती शुक्ला चौधरी, कोलकाता, एवं ग़ज़ल लेखन के लिए शान-अदब-सम्मान मो० अयुब शोला, सहारनपुर, एवं श्रेष्ठ साहित्य लेखन के लिए साहित्य सिद्धहस्त सम्मान डॉ. मनोहर भारती बेगलूर, कर्नाटक व वली उल्लाह खां फरोग, अजमेर, डॉ० जसवन्त सिंह जनमेजय, नई दिल्ली को एवं युवा लेखकों को दिया जाने वाला साहित्य नूर सम्मान सतीश चन्द्र शर्मा, सोनभद्र, बाल साहित्य लेखन के लिए जमीला खातून स्मृति सम्मान फखरे आलम खान, मेरठ प्रदान किया जाएगा. उक्त जानकारी एक पत्र के माध्यम से अब्दुल समद राही ने दी.

लघुकथा लेखकों के लिए सूचना

लघुकथा लेखकों से आग्रह है कि अपना या अपने सम्पर्क के लघु कथा लेखकों के पूर्ण परिचय, नाम, पता, फोन नं०, ईमेल आईडी, एक फोटो व लघुकथा के सम्बंध में किये गये कार्यो की जानकारी ३० सितम्बर २०१२ लिफाफे पर 'लघुकथा लेखक कोश हेतु' लिखकर प्रेषित करें. इसे लघुकथा कोश में निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.

लिखेंः सुरेश जांगिड़ उदय

डी.सी.निवास के सामने, करनाल रोड, कैथल-१३६०२७, हरियाणा, ०९२१५९९७३६५

डॉ० दर्द को विमल दोहाश्रीम

साहित्यिक संस्था, विमल साहित्य सदन, महामाया नगर, द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में चयनित साहित्यकारों को उनकी प्रकाशित काव्य-कृतियों के लिए विभिन्न अलंकरणों से सम्मानित किया गया. जिसमें झांसी के साहित्यकार डॉ० ओम प्रकाश हयारण 'दर्द' को उनकी कृति तड़पन(दोहा-संग्रह) के लिये 'विमल दोहाश्रीमृ' तथा 'विमल भारत भूषणमृ प्रदान किया गया. इस कार्यक्रम में डॉ० दर्द की कृति मेरी तेरह कहानियां(कहानी संग्रह)का विमोचन डॉ०एम.पी.विमल व जयवीर सिंह यादव द्वारा किया गया.

गीता का हिन्दी काव्य अनुवाद विमोचित

जबलपुर में प्रो० चित्रभूषण श्रीवास्तव द्वारा श्रीमद भगवत गीता के समस्त संस्कृत श्लोकों का हिन्दी काव्य में श्लोकशः अनुवाद का विमोचन महा मण्डलेश्वर नृसिंह पीठाधीश्वर डॉ० स्वामी श्यामदास जी महाराज, स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरि-अध्यक्ष समन्वय परिवार ट्रस्ट एवं श्री कृष्ण कांत चतुर्वेदी के करकमलों से सम्पन्न हुआ. कार्यक्रम का संचालन राजेश पाठक द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्रीमती सुनीता मिश्रा, भगवत दुबे, गार्गी शरण मिश्र, राजकुमार तिवारी, ओमकार श्रीवास्तव, विवेक रंजन श्रीवास्तव, डॉ. बी.एन. श्रीवास्तव, ए.एन.सिंग उपस्थित थे. प्रो० सी. बी.श्रीवास्तव ने अपने उदबोधन में कहा-'भगवत गीता एक विश्व ग्रंथ है जिसकी उपयोगिता सदैव बनी रही है. म.प्र. शासन ने बच्चों में संस्कारों के लिये ही गीता के पठन पाठन को पाठ्यक्रम में शामिल किया है.

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पांच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएंगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय

एल.आई.जी-९३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- २११०११, उ.प्र. के पते पर ३० नवम्बर २०१२ तक भेजना होगा.

किशन लाल शर्मा, आगरा की लघु कथाएं

रिश्ता

"भाभी, आप मम्मी-पापा से बात करों" श्रेया, दीपक से प्यार करती थी और उसे अपना जीवन साथी बनाना चाहती थी. श्रेया ने दीपक को अपनी भाभी रविना से मिलवाया भी था. दीपक अच्छा लड़का था. रविना ने अपने पति कमल से बात की. कमल बोला, "श्रेया के लिए नौकरी वाला लड़का ढूंढेगें." रविना की छोटी बहन वनिसा भी शादी योग्य हो गई थी. रविना ने अपने पिता को दीपक के बारे में बताया. मोहन लाल दीपक के घर गये. लड़का पसंद आ गया और उन्होंने बनिसा का रिश्ता दीपक से कर दिया.

दीपक की वनिता से सगाई होने के बाद ही नौकरी लग गई.

कार

"बाबा कार ले आओ न."

मेर दामाद, बहनोई और भतीजे ने कार खरीद ली थी. उनके पास कार देखकर मेरा चार वर्षीय पोता कई दिनों से कार लाने की रट लगाये था. मेरी पत्नी और बेटा भी पोते की जिद्द को हवा दे रहे थे.

पोते की जिद के आगे मुझे झुकना पड़ा. कार खरीदनी पड़ी थी. घर मं कार आने पर कालोनी में हमारा रुतबा बढ़ गया था.

मेरा बेटा दुकान करता है. सुबह को जाता है तो रात को ही घर लौटता है. उसे कार चलाने का समय ही नहीं मिलता. घर में और किसी को कार चलाना आता नहीं.

आये दिन बेटे के दोस्त या ससुराल वाले कार मांगकर ले जाते हैं. कभी कभी सोचता हूं. कार अपने लिए खरीदी थी या दूसरों के लिए.

पढ़ाई

सुबह-सुबह काम खत्म कर सोचा सुबह-सुबह ही कम धूप के रहते बाज़ार का काम कर आऊँ। तैयार हुई, रिक्षा पकड़ी और चली गई। रिक्षावाला बड़ा ही सभ्य सा व्यक्ति लगा। मैंने उससे आने-जाने के पैसे तय किये और चल पड़ी। रास्ते में थोड़ी-थोड़ी देर में हम बातें करते-करते बाज़ार पहुँच गये। मैं उस षहर में नई थी, वह मुझे सही दुकानों पर ले गया। मैंने अपना सामान खरीदा और वापस लौटने लगी। गरमी बढ़ चुकी थी। रास्ते में मौसमी का जूस पीने के लिये मैंने रिक्षा रुकवाई और रिक्षा से नीचे उतर कर छायादार वृक्ष के नीचे खड़ी हो गई। वह भी पास ही रिक्षा लगाकर सुस्ताने लगा। मैंने उसे जूस का गिलास दिया। उसने पिया वा मेरा षुक्रिया अदा किया। मैंने हँसते हुए पूछा, ''बेटा, पढ़े-लिखे लगते हो, षादी हो गई क्या?'' उसने जवाब दिया, ''हाँ, मैडम मेरी षादी हो गई है। मेरी बीबी बी.एड. कर रही है। मैं उसका खर्चा उठा रहा हूँ। कुछ दिन रिक्षा चलाऊँगा। दोपहर १२-१ बजे रिक्षा चलाता हूँ फिर षाम को कपड़े वाली दुकान पर एकाउन्ट्स का काम करता हूँ। रात को अंडों का ढेला लगाता हूँ। एक बार वो पढ़ ले फिर हम दोनों मिलकर कोई काम करेंगे। मैडम मैं भी बी.कॉम. हूँ।'' उसकी बात सुनकर मैं स्तब्ध रह गई व उसके अच्छे भविश्य की कामना करने लगी। ✍ **शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि.प्र.

हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वाले सम्मानित होंगे

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को संस्थान २००६ से सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं को अपने अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित कराकर ३० नमवब्र २०१२ तक नीचे लिखे कार्यालय के पते पर भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में <u>हिन्दी उदय सम्मान</u> व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्नलिखित पते पर लिखें:

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
उ.प्र.मो० 09335155949
email:
sahityaseva@rediffmail.com

क्या आप दांत दर्द से पीड़ित है

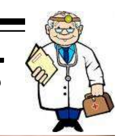

दांत दर्द जिसे होता है वही समझता है. यह दर्द इतना भयंकर होता है कि ऐसा लगता है मानो अभी जान निकल जाएगी. अगर आप भी दांत दर्द से पीड़ित है तो घरेलू नुस्खा जरूर आज़माएं. **हींग**-आपको अगर दर्द हो रहा है तो चुटकी भर हींग को मौसम्मी के रस में मिलाकर उसे रूई में लगाकर अपने दर्द करने वाले दांत के पास रखना है. दांत दर्द के लिए यह उपाय बहुत सुलभ, सरल एवं कारगर माना जाता है.

लहसुन-लहसुन पर रॉक सॉल्ट लगा लें और जिस दांत में दर्द है, उसके नीचे रख लें. इससे आपको आराम मिलेगा. आपको कभी दांत दर्द की प्राब्लम न हो, इसके लिए रोजाना लहसुन की एक कली चबाएं. इससे आपको आराम मिलेगा. दांत दर्द किसी प्रकार के संक्रमण की वजह से होगा तो लहसुन उस संक्रमण को दूर कर देगा.

लौंग-लौंग में औषधीय गुण होते हैं जो बैकटीरिया एवं अन्य कीटाणु का नाष करते हैं. लौग को उस दांत के पास रखें जिसमें दर्द हो रहा है. यह प्रक्रिया थोड़ी धीमी होती है. इसलिए आपको लौंग के साथ थोड़ा धैर्य रखने की जरुरत होगी. दांत के दर्द में लौंग का तेल प्राकृतिक जड़ी-बूटी का सबसे प्रभावी उपचार माना जाता है. लौंग के तेल को काली मिर्च के पाउडर में मिलाएं और उसे दर्द वाले दांत पर लगाएं.

प्याज-जो व्यक्ति रोजाना कच्चा प्याज खाते हैं उन्हें दांत दर्द की शिकायत होने की संभावना कम रहती है क्योंकि प्याज में कुछ ऐसे औषधीय गुण होते हैं जो मुंह के जीवाणु एवं बैकटीरिया को नष्ट कर देते हैं. जिस दांत में दर्द हो रहा हो वहां पर प्याज के टुकड़े को रखें अथवा प्याज चबाएं. ऐसा करने के कुछ ही देर बाद आपको महसूस होगा कि दांत दर्द गायब हो चुका है.

जड़ी-बूटी-आप दांत के दर्द से छुटकारा पाने के लिए घर में ही जड़ी-बूटी युक्त माउथ वाथ तैयार करते हैं. इसके लिए कैलेडुला (कैंलेडुला आफिसिनालिस), माइर(काम्मीफोरा माइरा) और सेग (सैल्विया आफिसिनालिस) का उपयोग किया जा सकता है. उपयोगी औषधीय जड़ी-बूटी में बासिल, मारजोरम और आसाफोटिडा शामिल हैं.

बिना किसी डाइट के अपने वजन को कम कर सकते हैं

अगर आप अपने दोस्तों को यह कहते हुए खाना खाने से मना कर दें कि उसके हाई कैलोरी है तो, उन्हें बताएं कि वह बिना किसी डाइट के अपने वनज को कम कर सकते हैं. अगर तरीके से भोजन किया जाए तो यकीनन वजन कम हो सकता है. कैसे

छोटी प्लेट का इस्तेमाल करें-अगर आपकी प्लेट छोटी होगी तो आप उसमें ज्यादा भोजन नहीं ले सकतीं. कम खाने से शरीर आहार में से पोषक तत्वों को ले लेता है और वसा को इकट्ठा होने से रोकता है.

अच्छे से चबाएं-खाने के हर कौर को बहुत अच्छी प्रकार से चबा चबा कर खाना चाहिए. जितनी अच्छी प्रकार से आप भोजन चबाएंगी उतनी ही कम कार्य आपके पाचन तंत्र को करना पड़ेगा. इससे चेहरे का अच्छा व्यायाम भी हो जाता है. **छोटे-छोटे टुकड़ो में खाएं**- बड़ा कौर खाने से भोजन को चबाने में काफी दिक्कत होती है. इसलिए अगर आप चम्मच से भोजन कर रही हैं तो केवल छोटा चम्मच ही लें.

इससे आप न केवल अपना वनज कम करेंगी बल्कि आपकी सीक्रेट टेकनीक का किसी को पता भी नहीं चलेगा.

स्लाद और सूप से करें षुरुआत-भोजन की षुरुआत हमेशा ताज़े फलों और सब्जियों से ही करना चाहिए. ध्यान दें कि आपका भोजन तला हुआ और ज्यादा चीनी युक्त न हों. ताज़ी सब्जियों से आपको एंटीऑक्सीडेंट, विटामीन और मिनरल जैसे जरुरी तत्व मिलेंगे.

टहले, साइकिल चलाएं या सीढ़िया चढ़े-खाना खाने के बाद अगर हो सके तो टहले या फिर सीढ़ियों का प्रयोग करें. इससे जमा हुआ फैट कम होगा.

हनुमत शतक

आध्यात्म की जिज्ञासा लिए हुए भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' जी का प्रस्तुत काव्य कृति 'हनुमत शतक' एक अच्छा प्रयासस है. वैसे तो मधुरेश जी अक्सर छपते ही रहते हैं. रचनाओं के माध्यम से मैं व्यक्तिगत रुप से उनसे पूर्व परिचित हूं. उनकी रचनाएं बोलती है. हिन्दी काव्य विधा की विभिन्न शैलियों में लिखित ६५ पृष्ठीय इस संकलन का मूल्य नित्य सप्रेम पाठ है. देखे इस संग्रह के अलग-अलग विधाओं के कुछ अंशः-

छप्पय-

जेहिं पूर्ण ब्रह्म परमात्म स्वयं रघुपति अभिनन्दत,
जेहि देव-सिद्ध-नर-नाग सौ प्रमुदित मन वन्दत।
जासु त्रास दुख-दोष-दनुजगण थर-थर कांपत,
जो तेजधाम, विकराल सिंधु गोपद-सम नापत।।

घनाक्षरी

अमित अपार ज्ञान-ध्यानवान धीर वीर,
बज्र सों शरीर कपिराज बलवन्त हैं।
नाम के सुनत धुनि लेत माथ यमराज,
पुण्य गुण-ग्राम शेष-शारद भनन्त हैं।

सवैया

लायक हौ सब भांति सदा
रघुनायक के गुण-गान-रंगीले।
सन्तन को अति मोम-से कोमल,
दुष्टन के प्रति क्रूर कंटीले।
नाम सुने भय भागत, भूत
पिसाचन के तुम प्रानन कीले।
भीर गंभीर परी 'मधुरेश' पै,
वेगि हरौ हनुमान हठीले।।

सोरठा

विनय करौं कर जोरि, संकटहर हनुमान प्रभु!
हेय सुमति-गति मोरि, तुम्हरे कृपा-प्रसाद से।
सुनि तुम्हारि हुंकार, भूत-प्रेत-भय भागहीं।
कष्टन से उद्धार, महावीर! द्रुत कीजिये।

चौपाई

जय संकटमोचन हनुमान!
जय कपीश! जय कृपानिधान।।
अमित तेज, बल-बुद्धि अपार।
अंजनिनन्दन पवन कुमार।।

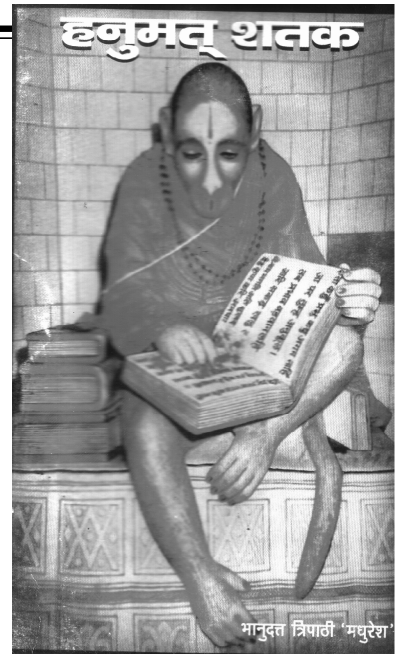

दोहा

मंगलमूरति पवनसुत शिवतनु कृपानिकेत।
मम मन-मन्दिर में बसौ सीताराम समेत।।

आध्यात्मिक काव्य से ओतप्रोत इस संग्रह को नित पठनीय बनाया जा सकता है. 'मधुरेश' जी को बधाई.

शाहकार

शाहकार दीप बिलासपुरी का एक ग़ज़ल संग्रह हैं. ग़ज़लकार के अनुसार यह विश्व के सबसे लम्बी ग़ज़ल हैं. क्रांति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस संग्रह का मूल्य १००/रुपये मात्र है. ग़ज़लकार की ग़ज़लों के बारे में मजरूह सुल्तानपुरी का कहना है कि 'दीप की शाइयरी का मक़सद दिल को बहलाना ही नहीं है बल्कि भटकी हुई अवाम को सही रास्ता दिखाना भी है. उनका एक शे'र इन्सान की सोच को बदल देने की ताक़त रखता है.'

पद्यमश्री बेकल उत्साही-'दीप की सोच में नयापन और व्यंग्य की झलक है. आज की सोच के साथ परम्पराओं का दामन उन्होंने नहीं छोड़ा है.'

आइये अब आपको बिलासपुरी के कुछ शे'रों से अवगत कराते हैंः-

करो तुम काम कुछ ऐसे खुदा हो शादमां यारो।
ज़मी पर वो लगे रहने भुलाकर आस्मां यारो।।
+++++++++++++++++++++
जब उनके काम आ पाई न उनकी डिग्रियां यारो।
हुए मजबूर तो करने लगे मज़्दूरियां यारो।।
+++++++++++++++++++++
गगन को चूमते थे जिन अमीरों के मकां यारो।
नहीं उनका ज़माने में रहा नामो-निशां यारो।।
+++++++++++++++++++++
पड़ोसी का पड़ोसी से बढ़ा है फ़ासिला जब से।
हमारे शहर में होने लगी हैं चोरियां यारों।।
+++++++++++++++++++++
मिले थी कल कहां रोटी क़लम के आसरे मुझको।
क़लम को बेचकर मैंने बना डाले मकां यारो।।
+++++++++++++++++++++
बड़े चालाक लगते हैं मुझे इस दौर के बच्चे।
रही मासूमियत अब नौनिहालों में कहा यारो।।
+++++++++++++++++++++
कभी पूछो उन आंखों से उजाले की परिभाषा।
जिन आंखों के मुक़द्दर में नहीं बीनाईयां यारो।

१२० पृष्ठीय इस ग़ज़ल में ग़ज़लकार ने तमाम उन पहलुओं का छूआ है जो सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक दृष्टि से वर्तमान परिवेश के हिसाब से कारगर हैं. प्रस्तुत ग़ज़ल के अधिकांश शेर अच्छे हैं जिनका अपना एक सार है. ग़ज़लकार को पत्रिका परिवार की तरफ से इस लम्बी ग़ज़ल के लिए ढेरों बधाई.